SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:55, Issue: 02
July-2024, Price Rs.20/-,
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

जुलाई-2024
रु.20/-

आणिवर आस्थान, तिरुमल

दि.16-07-2024

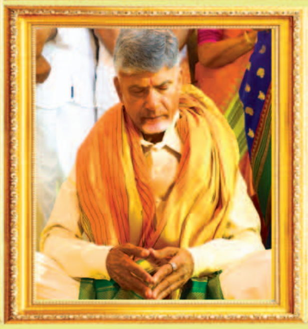

दि. 13-06-2024 को तिरुमल, श्री बालाजी भगवानजी को धर्मपत्नी सहित आं.प्र. के मुख्यमंत्री माननीय श्री एन.चंद्रबाबू नायडूजी और परिवार के साथ आं.प्र. के मंत्री (ह्यूमन रिसोर्स डेवलपूमेंट, आई.टी. इलेक्ट्रॉनिक्स अण्ड कम्युनिकेशन, आर.टी.जी.) श्री एन.लोकेशजी ने दर्शन किया। इस संदर्भ में वेद पंडित वेदाशीर्वचन किया। तदनंतर तीर्थ-प्रसाद व चित्रपट को मुख्यमंत्रीजी को समर्पित करते हुए ति.ति.दे. के जे.ई.ओ. श्री वी.वीरब्रह्मम्, आई.ए.एस., और श्रीमती एम.गौतमी, आई.ए.एस.। अन्य उच्च अधिकारियों एवं विधान सभा के सदस्यों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः॥

(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २-१६)

असत् वस्तु की तो सत्ता नहीं है और सत् का अभाव नहीं है। इस प्रकार इन दोनों का ही तत्व तत्वज्ञानी पुरुषों द्वारा देखा गया है।

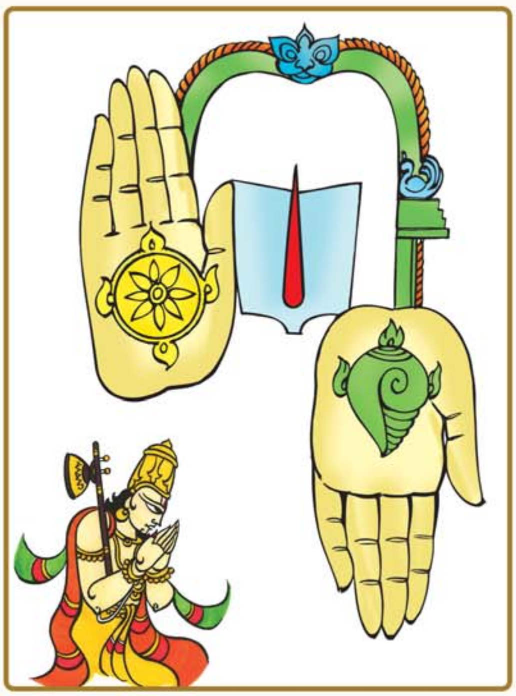

इंदरिकि अभयंबुलिच्चु चेयि
कंदुवलकु मंचि बंगारू चेयि ॥इंदरिकि॥

वेललेनि वेदमुलु वेदकि तेच्चिन चेयि
चिलुकु गुब्बलकिंद जेर्चु चेयि
कलिकियगु भूकांत कौगिलिंचिन चेयि
पलनैन कोनुगोल्ल वाडि चेयि ॥इंदरिकि॥

तनिवोक बलिचेत दानमडिगिन चेयि
ओनरंग ता दान मोसगु चेयि
मोनसि जलनिधि मम्मु मोनकु देच्चिन चेयि
येनय नागेलु धरिइंचु चेयि ॥इंदरिकि॥

पर सतुल मानमुलु पोल्लजेसिन चेयि
तुरगंबु बरपेडि दोड्डु चेयि
तिरुवेंकटाचलधीशुडै मोक्षंबु
तेरुवु प्राणुलकेल्ल देलिपेडि चेयि ॥इंदरिकि॥

भक्तों को अभयमुद्रा देनेवाले श्री वेंकटगिरीश के करकमलों की वंदना की गयी है।

वेंकटेश के सद्गुणों को, उनके करकमलों से समन्वित करते हुए अन्नमाचार्य कहते हैं कि इसी हाथ ने वेदों के ढूँढ़ बाहर लाया। भूदेवी को अपने आलिंगन में लेकर उन्हें सांत्वना दिलायी। यद्यपि बलि महाराज से इस हाथ ने दान माँगा था, मगर सच में यही स्वयं महादानी हैं। इसी ने हल को भी पकडा था तथा कुलकांताओं की रक्षा की थी। कल्कि अवतार में अश्व को भी यही चलायेगा। वेंकटाचल पर स्थित श्री वेंकटेश के रूप में, यही करकमल सकल जीवों को मोक्ष का पद भी दिलायेगा।

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी

तिरुपति श्री कपिलेश्वरस्वामीजी का पवित्रोत्सव

दिनांक	वार	उत्सव	
17-07-2024	बुधवार	–	अंकुरार्पण
18-07-2024	गुरुवार	पंचमूर्तियों को स्नपन तिरुमंजन	पवित्र मंडल पूजा, होमम्
19-07-2024	शुक्रवार	ग्रंधि पवित्र समर्पण, व्रतचरि	पवित्र प्रतिष्ठा, व्रतचरि
20-07-2024	शनिवार	पवित्र समर्पण, पवित्रोत्सव समाप्ति	पंचमूर्तियों का वीधि उत्सव

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति॥

वर्ष-55 जुलाई-2024 अंक-02

विषयसूची

व्यासाय - विष्णुरूपाय	श्रीमती पी.सुजाता	07
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	10
दैव... भक्त	श्री वेमुनूरि राजमौलि	14
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	15
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	17
कालोपासना करनेवाले ही कालातीत हैं	श्रीमती वी.केदारम्मा	21
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	24
शर्मिष्ठा - विधि वंचिता	डॉ.के.एम.भवानी	25
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	31
महर्षि वेदव्यास	डॉ.जी.सुजाता	34
'गीता-माधुरी'	श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण	37
विभाजन	डॉ.वड्डी जगदीश	40
जामुन और उसके स्वास्थ्य में लाभ	डॉ.सुमा जोषि	43
आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!!	श्री अवधेष कुमार शर्मा	46
जुलाई महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
नीतिकथा - इलाज का रहस्य	श्री के.रामनाथन	48
चित्रकथा - दैव निंदा महा पाप है	डॉ.एम.रजनी	50
क्विज - 24		52

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - तिरुमल, आणिवर आस्थान।
चौथा कवर पृष्ठ - श्री व्यास महर्षि।

गौरव संपादक
श्री जे.श्यामला राव, आई.ए.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
पुस्तक बिक्री केंद्र & मुद्रणालय,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।
- प्रधान संपादक

संपादकीय

आदर्श गुरु

गिरयो गरवस्तेभ्योऽप्युर्वी गुर्वी ततोऽपि जगदंडम्।
तस्मादप्यति गुरवः प्रलयेऽप्यचलामहात्मानः।।

पर्वत भारी हैं। पर्वत से भी पृथ्वी भारी हैं और उससे भी ब्रह्माण्ड भारी है। ये सभी प्रलय के समय नष्ट हो जायेंगे। प्रलय काल में भी स्थिर स्वभाव से रहनेवाले ही महात्म बन जाता हैं।

गुरु की कृपा के बिना विद्यार्थी आगे नहीं बढ़ता। विद्याभ्यास को पूरा करने के लिए गुरु का उपदेश जरूरी है। एक छात्र की ज्ञान की प्यास केवल एक शिक्षक ही बुझा सकता है। इसलिए छात्र का पहला कर्तव्य ऐसे शिक्षक की तलाश करना है। शिक्षक को भी अपने पास आने वाले विद्यार्थी को ज्ञान देना चाहिए। यह ज्ञान ही अच्छे परिणाम देता है। सत्पात्र दान ही सत्फल देता है। सभी प्रकार के दानों में ''विद्यादान'' सर्वश्रेष्ठ है।

जब हम गुरु शब्द सुनते हैं तो हमारे मन में एक प्रकार की नेक भावना उत्पन्न हो जाती है। क्योंकि जैसा कि बड़े-बुजुर्ग कहते हैं, गुरु हमारे माता-पिता के समान ही पूजनीय होते हैं। गुरु का स्थान बहुत ऊँचा है। विद्यार्थी को ज्ञान प्राप्त करने के लिए गुरु होने का आवश्यक है।

यदि शिक्षक न हो तो छात्र अंधा बन जाता है, जिस प्रकार अंधा को आगे बढ़ने के लिए सहारा महत्वपूर्ण होता है, उसी प्रकार छात्र के लिए शिक्षक का मार्गदर्शन महत्वपूर्ण होता है। ''तमसोमा ज्योतिर्गमया'' माने छात्र का अंधकार को दूर करनेवाली दीपज्योति ही गुरु है। एक शिक्षक एक छात्र के लिए पिता के समान होता है यदि पिता इस दुनिया में छात्र के जन्म का कारण है तो शिक्षक छात्र को जीवन में ज्ञान और मार्गदर्शन दिखाता है। ज्ञान किताबी ज्ञान नहीं है यह पूर्ण ज्ञान है यह मनुष्य के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है मानवता से दैवत्व की ओर बढ़ने का एक उपकरण है।

ऐसा लगता है माने कुछ परिस्थितियों में मनुष्य अपने कर्मों से स्वयं को राक्षस प्रवृत्ति में परिवर्तित हो रहा है। बचपन से ही विद्यार्थी में सद्भावना का अनुकरण होना चाहिए। उन्हें हममें दोहराया जाना चाहिए। ''आज के बच्चे कल के नागरिक हैं।'' इसलिए बच्चों को अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के लिए कम उम्र से ही एक शिक्षक की आवश्यकता होती है राष्ट्रीय संपत्ति ऐसी बहुमूल्य संपत्ति की देखभाल करना देश के प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है।

प्रत्येक शिक्षक को अपने कर्तव्य का पालन अत्यंत सावधानी से करना चाहिए। क्योंकि शिक्षक का आचरण ही विद्यार्थी उसका अनुसरण करता है और उसके वचन ही सबके वचन होते हैं। विद्यालय एक मंदिर होता है। विद्यालय में पूजा नियमित क्रिया है, इसमें सभी का सहयोग आवश्यक है। सहयोग हो तो कुछ भी असंभव नहीं। मनसा, वाचा, कर्मणा... ये तीन प्रकार का होता है। आशा करें है कि यदि हर कोई अपने सर्वेक्षण के अनुसार परिणाम देता है, तो हम ऊपर वर्णित गुरु के मार्ग पर कदम बढ़ा कर आदर्श व्यक्ति बन जाएँगे।

स्वस्ति!

व्यासाय - विष्णुरूपाय

- श्रीमती पी सुजाता

भारत देव-भूमि रहा। समस्त संसार-भर के अंदर एक भारत में ही सृष्टि-कर्त्ता परब्रह्म का नाना प्रकार के रूपों में अवतरित होना संभवित हुआ! स्वयं भगवान इस पुण्य-भूमि में - मरीचि, परशुराम, कपिल, मत्स्यादि 21 अवतार रूपों में व्याप्त होकर जनम ले आया! ज्ञान, भक्ति, वैराग्य की व्याप्ति कर, लोगों में शांति तथा सुस्थिर जीवन की व्याप्ति करायी थी।

भगवान की अनेक रूपता का कई एक प्रयोजन सिद्ध हुआ लोगों को सीख-सिखाई की आवश्यकता थी। गुरु लोग उत्पन्न हो आये और अपनी-अपनी शिष्य-परंपरा बनी। गुरुलोगों ने अपने शिष्यों को इस सृष्टिक्रम की वैचित्रि को बोध-गम्य बनाया था। उपनिषदों, आरण्यकों तथा ब्राह्मणों में गुरु-शिष्यों की परंपरा के द्वारा इस अगम्य सृष्टि-परंपरा के भेद-विभेदों की बहस खूब चली थी।

व्यास, वाल्मीकि, गौतम, भरद्वाज, कण्व आदि गुरु-परंपराएँ विख्यात होकर उन-उन दिनों के जन-मानस पर प्रखर प्रभाव डाल कर समाज को खूब उत्तेजित कर गयी थीं। सनातन भारत में गुरु का बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान था।

गुरु, गोविन्द दोऊँ खड़े, काके लागौं पाँव?

बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय।। (संत कबीर)

गुरु का इतना महत्व है कि गुरु के अभाव में भगवान के सच्चे स्वरूप का दर्शन दुर्लभ है। सच्चा गुरु भगवान को जानने में सहायता करता है।

ऐसे सद्‌गुरु की परंपरा में ''व्यासमहर्षि'' का अविच्छिन्न स्थान है।

व्यास महर्षि की जनम-कथा

त्रेतायुग में ''वशिष्ठ'' नामक एक ब्रह्मर्षि था। वशिष्ठ महर्षि सप्तर्षियों में से एक था। इसकी पत्नी का नाम ''अरुंधती'' था। वशिष्ठ ब्रह्मदेव का मानसपुत्र था। कहा जाता है कि एक दिन आसमान में सूरज और वरुण कहीं को जा रहे थे। उन्हें स्वर्ग की तरफ जाती हुई ''ऊर्वशी'' दिख गयी, तो उसकी असीम सुन्दरता पर मित्रा, (सूरज), वरुणदेव खूब मोहित हो उठे, तो उनका वीर्य-पतन हो गया। और तो, वीर्यपतन करके वे दोनों निकल गये, मगर,

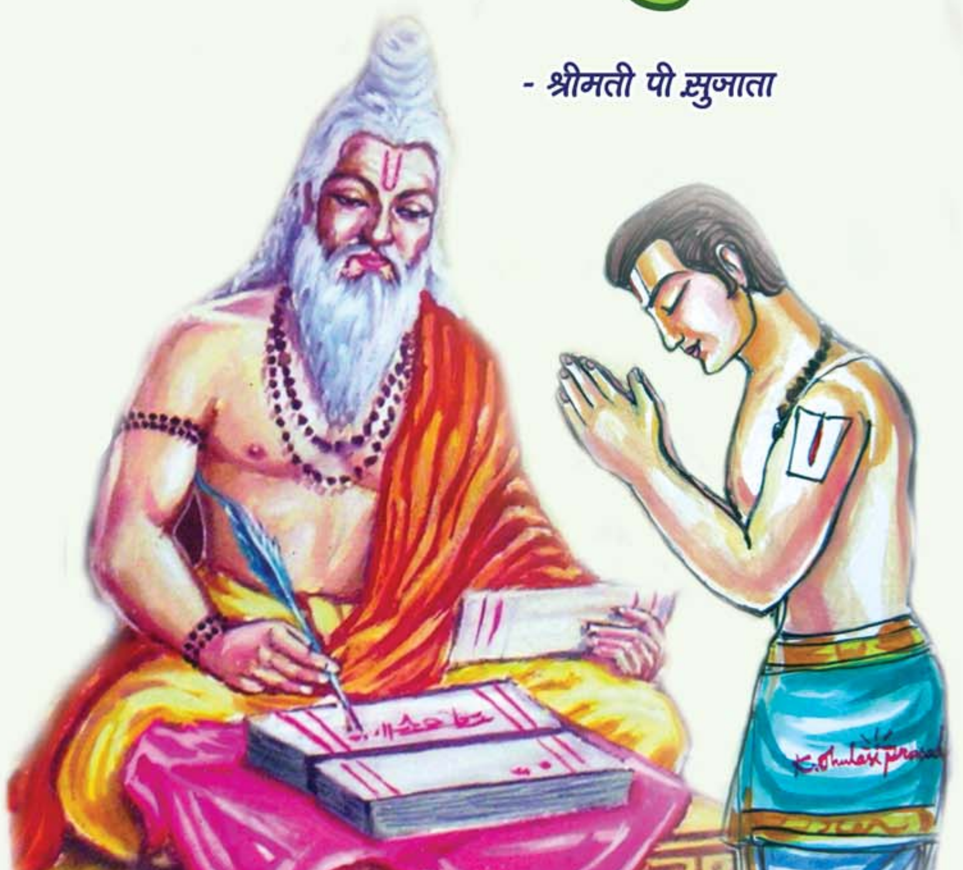

ऊर्वशी जा न पायी। उसने उस पतित वीर्य को एक ''कलश'' में रक्षित रखा, तो उस कलश में से महर्षि अगस्त्य एवं महर्षि वशिष्ठ का जनम हुआ।

वशिष्ठ महान् तपस्वी था और ब्रह्मर्षि बना। वशिष्ठ महर्षि सूर्यवंशीय राजाओं का कुलगुरु एवं राजपुरोहित था। वशिष्ठ का पुत्र 'शक्ति' था, जो विश्वामित्र के हाथों मर गया था। शक्ति का पुत्र था 'पराशर'।

पराशर महर्षि एक दिन यमुनानदी पार करने गया था। नदी के इस तट पर एक सुन्दरी कन्या नाव चलाती खड़ी थी। पराशर अव्वल किनारे पर जाने के लिए नाव में चढ़ बैठा। नाविका सुंदरी का नाम ''मत्स्यगन्धी'' था, जो उस देश के राजा 'दाशराजा' की इकलौती लाड़ली पुत्री

थी। पुण्यार्थ, बिना शुल्क के नाव चलाती हुई लोगों को किनारे पहुँचाती थी।

नाव में बैठा पराशर मस्त्यगन्धी की अप्रतिम सुन्दरता पर मोहित हो गया था। उसने मस्त्यगन्धी से अपने मन की कामना व्यक्त की कि वह उस कन्या से 'कामोपभोग' करना चाहता है।

उस समय दिन का समय था। आसमान में सूरज चकाचौंध हो प्रकाश बिखेरता था, तो मस्त्यगन्धी ने आपस के समागम के लिए आपत्ति उठाई। मगर पराशर ने अपनी तपोशक्ति के बल से वहाँ अंधकार का सृजन कर, वहीं नाव पर ही मस्त्यगन्धी-कन्या से संभोग कर दिया।

पराशर एवं मस्त्यगन्धी के संयोग से सद्योगर्भ से तत्काल एक पुत्र का जनम हो गया। अन्धकार में जनमने के कारण वह शिशु काला था, अतएव उसका नाम 'कृष्णद्वैपायन' रखा था - माता-पितरों ने।

पराशर का बेटा था, तो 'पाराशर्य'' कहलाया। ऐसा अपना काम सिद्ध कर पराशर महर्षि मस्त्यगन्धी और अपने पुत्र कृष्णद्वैपायन से बिदा लेकर, तप करने चला गया - जंगलों में!!

अब अपनी माता से अनुमति लेते हुए कृष्णद्वैपायन भी तपस्या करने ''बदरिका-वन'' चला गया, यह आश्वासन देते हुए कि कारणवश जब भी बुलाने पर माता के सम्मुख आकर उपस्थित हो जावेगा।

वेदव्यास नाम

वेद चार हैं - ॠग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्वणवेद। वेद अपौरुषेय हैं, याने- वेद किसी मानवमात्र या पुरुष के द्वारा लिखे नहीं या ग्रन्थस्थ किये गये थे।

वेद, स्वयं ब्रह्मा के मुख से प्रकट हुए थे। वेद ब्रह्मा के मुख से मुखरित हुए थे। लेकिन, वेद के भी विरोधी हैं - राक्षस या दानव। राक्षसलोग वेदों को न मानते थे, क्योंकि उनमें उनके विरोधी देवतालोगों का वर्णन, महिमा, सेवा, पूजादिकों का वर्णन होता है। अतएव, राक्षस लोग वेदों को ध्वंस करना चाहते

थे। वेदों को ध्वंस बनाने के कुविचार से ही ''सोमक'' नामक राक्षस चारों वेदों को चुरा कर, उन्हें ध्वंस करने के विचार से उन्हें लेकर समुंदर में घुस गया था। श्रीस्वामी महाविष्णु ने सोमक-राक्षस के पीछे-पीछे जाकर समुंदर में कूद पड़ा और सोमक का वध कर, चारों वेदों को सुरक्षित लाकर देवताओं को सौंप दिया।

मगर, वेद इस चोरी तथा अनंतर के युद्ध आदि संघर्षों के कारण, एक में एक मिल कर, आदि अंत का पता न चलता था। एक वेद में दूसरा वेद घुस जाने से बड़ा असमंजस पैदा हो चला था।

वेदों की इस अव्यवस्थिति, असमंजसता दूर करने की आवश्यकता थी। वेदों की इस असमंजसता एवं अव्यवस्थिति को परिष्कार करने का कार्यभार वेदशास्त्र-कोविद, पराशर का पुत्र तथा कृष्णद्वैपायन को सौंपा गया था।

मस्त्यगन्धी का पुत्र पाराशर्य नामक कृष्णद्वैपायन महर्षि ने वेदों को सव्य बना कर, उन्हें परिमार्जित कर, उनकी असमंजस मेल-मिलाप दूर किया। उन्हें सुलभ-ग्राह्य बना दिया। पराशर तथा मस्त्यगन्धी का सद्योजात पुत्र कृष्णद्वैपायन - वेदों को न्यास व परिमार्जित करने से ''वेदव्यास'' बन गया। कृष्णद्वैपायन 'वेदव्यास' नाम से ही तब से सुप्रसिद्ध बनकर भारतीय इतिहास के पन्नों में सुस्थिर स्थान पाया है।

वेदव्यास की रचनाएँ

वेदव्यास महर्षि ने संस्कृत में 'महाभारत' की रचना की, जिसका तेलुगु भाषा में एक बृहत् ग्रन्थ के तौर पर अनुवाद कर दिया गया है। 'आन्ध्रमहाभारत' की रचना न भूतो न भविष्यति है। अठारह पर्वो की आन्ध्रमहाभारत की रचना समूचे विश्वभर में एक ध्रुवतार बन कर खड़ी है। तेलुगु महाभारत की रचना के लिए लग-भग 500 साल लगे थे। 11वीं सदी में प्रारंभित आन्ध्रमहाभारत 15वीं सदी में जा कर पूरा हो पाया था। समय-समय पर नन्नयभट्टाचार्य, तिक्कनसोमयाजी और एर्राप्रगड़ा नामक तीन दिग्गज कवियों ने इसकी रचना में भाग लिया था, जो एक रिकॉर्ड है।

महाभारत के अलावा वेदव्यास जी ने अठारह पुराणों की रचना की थी, जिसमें 'महाभागवत' का भी स्थान है। वेद-न्यास, अष्टादश पुराणों के अलावा वेदव्यास ने 'ब्रह्मसूत्रों' का भी प्रणयन किया था। सृष्टि के अनोखेपन पर लिखाब्रह्मसूत्र ग्रन्थ भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण का एक अनमोल रचना है, जो दुनिया में एक अनोखा कीर्तिमान स्थापित कर गया हुआ है।

वेदव्यास का परिवार

वैसे वेदव्यास जी प्रमुखतया ब्रह्मचारी माने जाते हैं, फिर भी उनकी अलग-सी एक पत्नी 'वाटिका' नामकी बतायी जा रही है। उनका जन्म उत्तराखंड के 'कल्पि' नामक प्रदेश में हुआ था। उन्होंने- विदुरा, धृतराष्ट्र, पांडुराजा आदियों को जनम दिया था। उन्होंने 'शुक्रब्रह्म' नामक एक महा ज्ञानी पुत्र को भी जनम दिया।

परिसमाप्ति

कृष्णद्वैपायन ... पाराशर्य ... बादरायण ... वेदव्यास साक्षात् श्रीमन्महाविष्णु भगवान के ही अवतार हैं। उनके अभाव में वेदों का परिमार्जित रूप आज दुर्लभ है। महाभारत, महाभागवत् आदि अनुपम ग्रन्थ उनकी प्रदत्त विभूति हैं, जो भारतीय सामाजिक दर्पण हैं।

वेदव्यास जी भारतीय साहित्यिक क्षेत्र में मूलभूत बीज बोये हुए सुसंपन्न साहितीकर्षक हैं, जिसके फलस्वरूप आज हम इतनी भारी साहित्यिक विरासत के हकदार बने हुए हैं। उनकी पुण्य रचनाएँ पढना ही आज की उनकी पुण्य जन्मतिथि पर हमारा उन्हें एक उपहार बन कर रहेगा।

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

ध्वजारोहण के दिन आंदोलिका में (पालकी जैसा वाहन) भगवान शोभायात्रा के लिए निकलते हैं और तत्पश्चात ही ध्वजारोहण होता है। उस दिन की रात को महाशेषवाहन पर भगवान की शोभायात्रा संपन्न होती है। दूसरे दिन सुबह लघुशेषवाहन और शाम को हंसवाहन की योजना है। तीसरे दिन सुबह को सिंहवाहन और शाम को मौक्तिक मंटप वाहन (मोतियों का वितान) पर भगवान विराजित होते हैं। इसी प्रकार चौथे दिन को कल्पवृक्षवाहन और शाम में सर्वभूपालवाहन; पाँचवें दिन पर मोहिनी वेष में आंदोलिका वाहन (पालकी सेवा); तथा शाम को गरुडवाहन पर भगवान शोभित होते हैं। छटे दिन सुबह को, हनुमान वाहन पर विलसित हो शोभायात्रा पर भगवान तिरुवीथियों में भ्रमण करते हैं। उसी दिन दोपहर के बाद वसंतोत्सव चलता है। वसंतोत्सव के बाद मंगल की सूचना के रूप में मंगलगिरि वाहन (तिरुच्चि वाहन) की व्यवस्था है। छटवें दिन रात को भगवान ऐरावत (हाथी) पर आसीन होकर पुरवीथियों की शोभा बढाते हैं। सातवें दिन प्रातः को ही सूर्यप्रभा (सूर्य भगवान) वाहन पर शोभित होते हैं और रात को चन्द्रप्रभावाहन (चंद्रमा) पर विराजमान होते हैं। आठवें दिन पर सुबह विशिष्ट रूप से अलंकृत बडे रथ पर देवेरियों के साथ शोभायात्रा में भगवान तिरुवीथियों में निकलकर भक्तजनों को आनन्द प्रदान करते हैं। उस दिन रात को उच्चैश्रव वाहन (अश्ववाहन) सेवा संपन्न होती हैं। नौंवाँ दिन अति विशिष्ट दिन होता है। उस दिन पर श्रवणा नक्षत्र रहता है। श्रवणा नक्षत्र भगवान का जन्म नक्षत्र है। आंदोलिका (पालकी) में विराजमान हो अवभृथ स्नान के लिए निकलते हैं। अवभृथ स्नान उत्सवांत में संपन्न होनेवाला स्नान है। यह श्री वराहस्वामी के मंदिरांतर्गत मंटप में संपन्न होता है। स्वामिपुष्करिणी में चक्रस्नान संपन्न किया जाता है। अंत में एक और शोभायात्रा निकलती है मंगलगिरि वाहन (पालकी) पर। तदुपरांत गरुडध्वज को, जो आरंभ में फहराया गया था, अवनत कर देते हैं। इसे ध्वजावरोहण कहते हैं। उपयुक्त विधि से ध्वजा को अवरोहित करने की प्रक्रिया चलती है। दसवें दिन पर पुष्पयाग-महोत्सव चलता है। तरह तरह के पुष्पों से भगवान की आराधना ही पुष्पयाग-महोत्सव है। यह बहुत ही वैभवपूर्ण ढंग से संपन्न होता है। इस सबका दर्शन भाग्य पाकर राजा, देवता, ऋषि-मुनि और भक्त समूह अपने-अपने स्थानों पर वापस चले जाते हैं। अपने-अपने नियमित कार्यों में लग

जाते हैं। इस प्रकार के महोत्सव को संपन्न कराकर ही ब्रह्म, श्रीनिवास से आज्ञा लेकर सत्यलोक लौटे थे। तोंडमान राजा ने भी भगवान से आशीर्वाद लेकर अपनी राजधानी लौटे थे। (भविष्योत्तर पुराण, अ.14, श्लो. 39-68).

भगवान श्री वेंकटेश्वर, आनंदनिलय में पाँच रूपों में (पंच-बेरम्) विराजित हैं। ये पाँच बेरम् या रूप हैं - (1) ध्रुव बेरम् : जो स्थायी रूप से प्रतिष्ठित, अविचलित है। स्थानक मूर्ति रूप है - मूर्ति खडी मिलती है। यह मूल-विराट मूर्ति है। (2) उत्सव-बेरम् : जो शोभायात्राओं (उत्सवों) में पायी जाती है। तिरुवीथियों में जब भगवान उत्सव यात्रा या शोभायात्रा में निकलते हैं, तब यही मूर्ति निकलती है। इस रूप में भगवान श्रीदेवी और भूदेवी सहित विराजमान मूर्ति हैं। यह मूर्ति ''कल्याणोत्सव'' में भी देखने को मिलती है। (3) स्नपन बेरम् : यह उग्र श्रीनिवास रूप है। यह क्रोध को व्यक्त करनेवाली छोटी मूर्ति है। यह ध्रुव बेरम् (मूलविराट मूर्ति) के साथ रहती है। उग्र श्रीनिवास मूर्ति (वेंकटत्तुरैवार) की शोभायात्रा वर्ष में केवल एक बार संपन्न होती है। तिरुवीथियों में उनका दर्शन साल में एक बार ही मिलता है। कैशिक-द्वादशी (लगभग अक्तूबर महीने के बीच में) दिन प्रातः को ही उनकी शोभायात्रा होती है। मान्यता है कि उनकी तीव्र उग्र दृष्टि पडने पर सारे घर जल जाते है। अतः सूर्योदय से पहले ही यात्रा पूरी की जाती है। (4) कौतुक-बेरम् : इस मूर्ति को भोग मूर्ति, भोग श्रीनिवास और सर्वाधिक श्रीनिवास भी कहते हैं। यह मूर्ति चाँदी की मूर्ति है। यह मूर्ति विलास पूजा मूर्ति है। अभिषेकम्, शय्या पूजा आदि का निर्वाह इस मूर्ति के लिए विशेष रूप से संपन्न होते हैं। (5) बलि-बेरम् : ये 'कोलुवु-मूर्ति', लेखक श्रीनिवास मूर्ति हैं (मंदिर का लेखा - जोखा निरीक्षण ये करते हैं।) इस मूर्ति को रोज महामणि मंटप में सुवर्ण सिंहासन पर आसीन कराया जाता है। सिंहासन सुवर्ण छाते के नीचे शोभित रहता है। इनके सामने लेखा समर्पित होता है। महामणि मंटप का दूसरा नाम आस्थान मंटप है। तोमाल सेवा और अर्चना के बीच लेखा समर्पण होता है। पूर्व दिन का लेखा यानी भगवान को समर्पित मनौतियाँ, धन, मनाये गये उत्सव, आर्जित सेवाएँ, आर्जितम् (आय), भोग आदि सबका विवरण बलि पीठम् (ध्वजस्तंभ के बगल में तथा मंदिर के चार कोनों में हैं) के सामने प्रस्तुत किया जाता है।

श्री वेंकटेश्वर स्वामी की अनुकृति के रूप में चाँदी की मूर्ति की प्रतिष्ठा रानी सामवै द्वारा की गयी है। सामवै, शक्तिविटंकन की रानी थी। ये पल्लव राजाओं के सामंत थे। यह मूर्ति ''तिरुविलन कोयिल'' में प्रतिष्ठित है। मूर्ति को मूल्यवान आभरण, मणियाँ आदि भी समर्पित किये गये। मकर कुंडल (कानों के लिए मगर की आकृति में कुण्डल), चार लडियों की कंठमाला, उदरबंधनम्, तिरुवरै - पट्टिकै (कमरबन्ध), बाहुबन्ध, हाथ के लिए कंकण (तिरुच्चंदम्) सेट, वलैयाल, कारै (पायल), घंटिकाओं सहित पायल (पाद

चालयलम्), प्रकाशमान उज्ज्वल प्रभा (सिरोभूषण) आदि अनेक अलंकरण सामाग्री की भेंट की गयी। इन आभरणों का वजन 47 कलंजु है।

उक्त चाँदी की मूर्ति (मनवालपेरुमाल) के लिए सामवै ने नित्य नैवेद्य और अखण्ड दीप (ज्योति) का भी नियमन किया है। आयन संक्रांति (उत्तरायण संक्रांति के समय) मकर संक्रांति तथा दक्षिणायन या कटक संक्रांति (क्रमश : जनवरी 15 और जुलाई 15) पर पवित्र स्नान, अभिषेक का नियमन भी किया है। इसके अलावा विष्णु संक्रांति (मेष संक्रांति), तुला संक्रांति के समयों पर भी उत्सवों और पूजाओं की व्यवस्था उन्होंने की है। ये उत्सव और पूजाएँ दो दिनों के लिए चलती हैं। इस मूर्ति का आरंभिक उत्सव तमिल पुरट्टासि महीने में (सितंबर - अक्तूबर) संपन्न होता है। यह दो दिन का उत्सव है। मुख्य उत्सव नौ दिन का होता है। यह चित्तिरै मास (चित्ता नक्षत्र) में संपन्न होता है। अवभृथ स्नान श्रवणा नक्षत्र में कराया जाता है। इन सब की सम्यक व्यवस्थाएँ सामवै के समय में ही हुई हैं। तदार्थ सामवै ने खेत खरीद कर भगवान को अर्पित किया है। उनसे मिलनेवाली आमदनी से सब कार्यक्रम अविघ्न चलते रहे हैं। इस प्रकार के समर्पण को 'वर्तना' कहा गया है।

उक्त 'वर्तना' और व्यवस्था के साथ-साथ सामवै ने चाँदी की मूर्ति के लिए मार्गली महीने में (दिसंबर - जनवरी) एक और उत्सव की भी व्यवस्था की है। यह उत्सव मार्गली महीने में द्वादशी (मुक्कोटि द्वादशी) का उत्सव है। इस दिन पर श्री वेंकटेश्वर की चांदी की मूर्ति श्री वराहस्वामी के मंदिर तक लायी जाती है। मंदिर के सामनेवाले मंटप में मूर्ति को रखकर पवित्र अभिषेक कराया जाता है। वराह पुष्करिणी या स्वामिपुष्करिणी में सुदर्शन चक्र का स्नान कराया जाता है। विश्वास है कि उस समय मुक्कोटि (तीन करोड) देवता भी पुष्करिणी में डुबकी लेते हैं। इस अवसर पर पुष्करिणी स्नान अत्यंत महत्वपूर्ण और संपत्तिप्रदायक माना जाता है। इस उत्सव के लिए भी सामवै रानी ने उचित रूप से खेत आदि खरीद कर दान में दिया है।

लेख संख्या 8 और 9, रानी सामवै के समर्पणों का उल्लेख करते हैं। ये तिरुमल तिरुपति देवस्थानम के अभिलेखों की पुस्तक ''एर्ली इन्स्क्रिप्षन्स'' में उल्लिखित हैं। ये उनके शासन के 14 वें वर्ष के हैं। उस समय के शासक कोप्पात्र महेन्द्र पेन्मार हैं। इनको - पार्थवेन्द्रवर्मन भी माना गया है। इसके आधार मद्रास के रिपोर्ट हैं। उनके आधार पर माना गया है कि इन्होंने नार्थ आर्कट और चेंगल्पट्टु जिलों पर शासन किया है। (डेवलोप. एक्स. रिपोर्ट्स पृ.100-101)। लेकिन यह निर्धारण कुछ अनुचित ही लगता है।

''कोप्पात्र - महेन्द्र - पन्मार'' एक बडा समासिक नाम है। उनका संक्षिप्त नाम 'महेन्द्र पन्मार' हो सकता है। वही 'महेन्द्र वर्मार' भी हो सकता है। लेकिन इस नाम के साथ के 'को' और 'पत्र' में से 'को' का अर्थ 'राजा' हो सकता है लेकिन 'पत्र' अशोधनीय ही है। यह पहचान के परे की बात है। नाम को लेख में जोडने में कोई गलती हुई होगी।

5वीं सदी और उसके पश्चात् के आरंभिक पल्लवराजाओं के नाम अभिलेखों में राजा सिंहवर्मा से लेकर मिलते हैं। नेल्लूर, नार्थ आर्कोट (आजकल

के चित्तूर और वेल्लूर जिले मिलकर), चेंगलपट्टु जिलों के शिलालेखों द्वारा ये नाम मिलते हैं। अनुदानों में 'उरवपल्लि' गाँव का अनुदान सिंहवर्मा के शासन के 11वें वर्ष में (सन् 486) कंदुकूरु के भगवान विष्णुहर को, चारुदेवी का अनुदान दालूरु मंदिर को (दोनों मंदिर नेल्लूरु जिले में हैं) दिये गये हैं। महेन्द्रवाडी और मंडगप्पट्टु शिलालेख नार्थ आर्काट जिले के और कांज़ीवरम् लेख चेंगलपट्टु जिले के हैं। इससे निष्कर्ष निकलता है कि लेख संख्या 8 और 9 (खण्ड I) महेन्द्रवर्मान - I के समय (सन् 600-630) के हैं। इसमें संदेह की बात नहीं रह जाती।

वैसे तो रानी सामवै पल्लव राजकुमारी हैं। उनका नाम काडवन (पल्लव) पेरुंदेवी भी है। ये शक्ति विकटन की सहधर्मचारिणी हैं। शक्ति विकटन का एक और नाम श्री कडपट्टिगै है। सामवै पल्लवप्पेरकडैयर की पुत्री हैं। ये

पल्लवों के मंत्री और सामंत राजा थे। राजा महेन्द्रवर्मा भी पल्लव राजा थे। उनके समय में पल्लवों का राज्य उत्कर्ष पर था।

महेन्द्रवर्मा के 14 वें शासन वर्ष का उल्लेख होने के कारण लेख सं. 8 और 9 महेन्द्रवर्मा - I के ही माने जा सकते हैं। उन्होंने 30 वर्षों के लिए शासन किया था (सन् 600-630)। ये महेन्द्रवर्मा - II हो नहीं सकते। क्योंकि इन्होंने (महेन्द्रवर्मा - II) केवल दो वर्षों के लिए शासन किया (सन् 668-670)। रानी सामवै से भगवान की चाँदी की मूर्ति (मनवालपेरुमाल) सन् 614 में ही बनवायी गयी होगी। यही श्री वेंकटेश्वर की विराट मूर्ति की प्रतिमूर्ति के रूप में बनी पहली छोटी मूर्ति कही जा सकती है। यह मूर्ति सिर से पैर तक (आकंठ) आभूषणों से मण्डित मूर्ति है। इनमें दो बाहुवलयम् (बाजूबंद), चार तिरुच्चंदम् (हाथ के आभूषण), शंख, चक्र, श्रीवत्स, कौस्तुभ मणि और वैजयंती हैं। (ये आज अप्राप्य आभूषण हैं।) चाँदी की मूर्ति मणवालपेरुमाल मूलविराट मूर्ति (मूल बेरम्) की छाप ही है, समान आकृति की ही है। सामवै ने इसे उत्सव बेरम् के रूप में ही बनवाया होगा। उन्होंने इस मूर्ति में शंख, चक्र और अन्य चिह्नों को अवश्य रखवाया नहीं हो। इनके न होने से यही स्पष्ट होता है कि श्री वेंकटेश्वर के हाथों में विष्णु के चिह्न पहले नहीं थे। उस समय वेंकटेश्वर को लोगों ने (भक्तों ने) विष्णु का अवतार नहीं माना होगा। यह भी एक कारण हो सकता है कि आगे के पुराणों में श्री वेंकटेश्वर द्वारा तोंडमान को शंख और चक्र देने की बात उल्लिखित हुई है। तोंडमान को युद्ध के समय विष्णु के द्वारा शंख और चक्र देने और स्वयं वसुदास के पक्ष में जाने की गाथा है। बाद में कुम्हार भीम के सपत्नीक विमान में वैकुण्ठ गमन के पश्चात् (पृ. 93, 94) ये शंख और चक्र तोंडमान द्वारा वापस हुए है। (भविष्योत्तर पुराण)। सामवै ने चाँदी की मूर्ति और अखण्ड ज्योति का प्रावधान कराया है। इससे यह भी विदित होता है कि 7वीं सदी तक भगवान वेंकटेश्वर के लिए उत्सव विधान नहीं था। जमीन आदि के अनुदान से ही उत्सवों का आरंभ हुआ है।

क्रमशः

दैव... भक्त

तेलुगु मूल - श्री रवि कोंडल काव
हिन्दी अनुवाद - श्री वेमुनूरि राजमौलि

वह बड़ा दैव भक्त है। निरन्तर भगवद् चिन्तन में डूबे रहता है। अपने को चलाने वाले, जिलाने वाले दैव ही है। ऐसा उसका परम विश्वास है। एक बार बड़ा झंझा आया। नदियों में खूब बाढ़ आयी। भक्त जिस गाँव में था, उस गाँव के सारे लोग गाँव छोड़कर दूर प्रान्त चले जा रहे थे। उस प्रांत का नदी-प्रवाह समीप आ रहा था। सरकार गाँव खाली कराकर सभी लोगों को सुरक्षित प्रांतों को पहुँचा रही थी। भक्त तो न हिला न डुला। अपनी देहली पर बैठकर दैव-स्मरण कर रहा था। सरकार की तरफ से एक व्यक्ति आया; उसने उससे अपने साथ आने को कहा। ''नदी का प्रवाह बढ़ रहा है; किसी भी क्षण तुम्हे डुबा देगा; आओ'' - कहकर हाथ बढ़ाया। भक्त ने कहा- ''मेरी रक्षा करने वाले तुम कौन हो? मेरा दैव ही मेरी रक्षा करेगा।'' ''अपना कर्म (कर्मफल) आप ही भोगो'' - कहकर वह चला गया। प्रवाह और बढ़ गया। सभी जगहों के लोगों को सुरक्षित प्रान्तों को ले जाने नावें आयीं। भक्त को भी जल्दी आकर नाव चढने को कहा गया। किन्तु उसने नहीं माना। ऊपर से उसने कहा - ''मेरी रक्षा करने वाले तुम न हो? मेरी तो रक्षा करने वाला मेरा दैव ही है।'' नावें चली गयीं। प्रवाह की उधृति बढ़ गयी; अपने घर पर चढकर भक्त बैठ गया। एक पेड़ बहकर उसके नजदीक आया। उस पेड़ की डाली पर बैठने वाले व्यक्ति ने बुलाकर कहा- ''आओ! तुम भी इस डाली पर बैठो।'' उसने कहा- ''तुम या यह डाली मेरी रक्षा कर नहीं सकते; मेरी रक्षा करने वाला दैव ही स्वयं आयेगा।'' पानी की बाढ और बढ़ गयी। घर के ऊपर खड़े होने वाले भक्त के गले भर तक पानी आ गया। वह हाथ उठाकर दैव को प्रणाम कर रहा था। इतने में ऊपर से हेलीकैप्टर आया। ''डूब जाओगे; मर जाओगे; आ जा; इस रस्सी को पकड़ लो; हम ऊपर खींच लेंगे'' - कहकर बड़ी, मोटी रस्सी उसकी ओर बढायी। भक्त ने फिर से कहा- ''मेरा दैव आकर मेरी रक्षा करेगा; तुम लोग जाइए।'' अत्यधिक वेग से आनेवाले प्रवाह ने उसे पूरा डुबाया। भक्त मर कर दैव-सन्निधि में चला गया। दैव से प्रश्न किया- ''मैं ने तुम पर पूरा भरोसा रखा; मैं ने समझा कि तुम ही मेरे रक्षक हो; क्या मेरी प्रार्थनाएँ और कीर्तनाएँ व्यर्थ की है; क्या तुम असल में दैव हो; क्या यही तुम्हारी करतूत है?'' दैव ने उसे देखा। और कहा- ''अरे! क्या तुम ही हो? क्या तुम मर गये हो? अनुक्षण तुम्हारी तरफ नजर डालता हुआ तुम्हे जिलाने मनुष्यों को भेजा; नावों को भेजा; पेड़ की डाली को भेजा; अंत में हेलीकैप्टर भी भेजा; तुमने किसी की भी परवाह नहीं की; यों ही तुमने प्राण खो दिये।'' भगवान अपने पर विश्वास रखने वाले का कभी अनर्थ नहीं करता; शायद स्वयं आ न सकता होगा। किन्तु ''दैवं मानुष रूपेण'' की उक्ति के अनुसार किसी न किसी रूप में आकर रक्षा करता है। भक्त इस विषय को जान न पा सका।

ॐ शांति शांति शांतिः।

(गतांक से)

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया

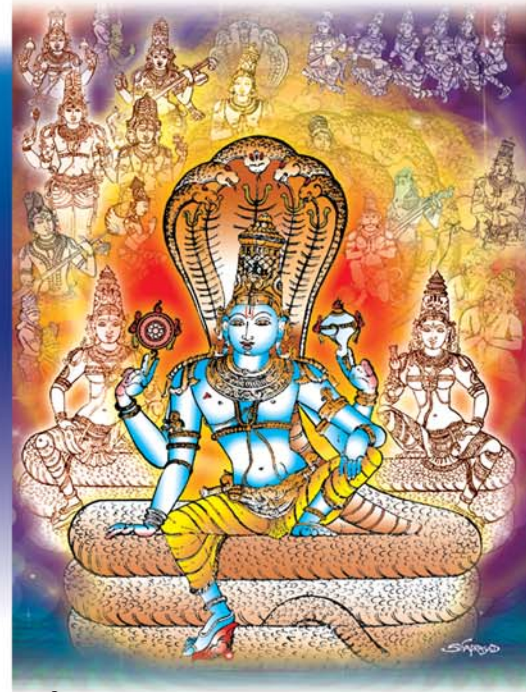

57) तिरुप्पुट्कुळि

यह दिव्य क्षेत्र कांचीपुरम - वेलूर रेल मार्ग में कांची से 12 कि.मी. दूरी पर है। चेन्नै से 50 कि.मी.। कांची से बस की सुविधा है।

मूलमूर्ति - विजयराघव पेरुमाल - जटायु की प्रार्थना के अनुसार परमपद नाथ के रूप में पूर्वाभिमुखी आसीनस्थ दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - मरकदवल्लितायार (अलग सन्निधि)।

तीर्थ - जटायु तीर्थ।

विमान - विजय कोटि (वीरकोटि) विमान।

प्रत्यक्ष - जटायु।

पुराणों में निम्न प्रकार विवरण है। सीता की खोज में जाते वक्त श्री रामचन्द्र जी कुछ समय तक यहाँ निवास करते थे। जटायु का अंतिम संस्कार (तर्पण आदि) किया। मंदिर के सामने जटायु की अलग सन्निधि है।

मंगलाशासन - 1 आल्वार; 2 दिव्य पद।

58) तिरुनिन्ड्रवूर - (तिण्णनूर)

चेन्नै - अरक्कोणम् रेल मार्ग में - तिरुनिन्ड्रवूर नामक स्टेशन है। स्टेशन से मंदिर 2 कि.मी. दूरी पर है। चेन्नै से बस की सुविधा है।

मूलमूर्ति - भक्तवत्सल पेरुमाल - पत्तराविपेरुमाल। पूर्वाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - सुधावल्लि - सवित्र - तमिल में (एन्नैप्पेट्र तायार)।

तीर्थ - वरुण पुष्करिणी, वृद्धक्षीर नदी।

विमान - श्रीनिवास - (उत्पल) विमान।

प्रत्यक्ष - वरुणन्।

मंगलाशासन - 1 आल्वार; 2 दिव्य पद।

59) तिरुएव्वुळ (तिरुवळ्ळूर) (तिरुवळ्ळूर - पुण्यावर्त वीक्षारण्य क्षेत्र)

चेन्नै-अरक्कोणम् रेल मार्ग में तिरुवळ्ळूर है। (चेन्नै से 45 कि.मी. दूरी पर है) रेल्वे स्टेशन है। रेल्वे स्टेशन से मंदिर 5 कि.मी. दूरी पर है। बस आदि की सुविधा है।

मूलमूर्ति - वीरराघव पेरुमाल। पूर्वाभिमुखी, भुजंग शयन।

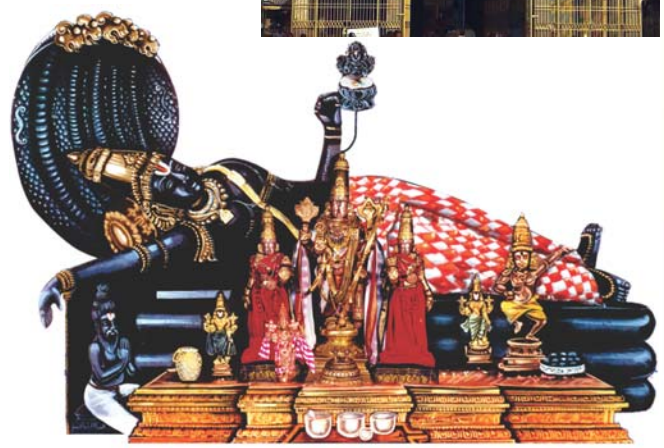

तायार (माताजी) - कनकवल्लि (वसुमती) अलग सन्निधि।

तीर्थ - हृद्ताप नाशिनी पुष्करिणी।

विमान - विजय कोटि विमान।

प्रत्यक्ष - शालिहोत्र मुनि, चतुर्मुख, शंकरन्।

विशेष - अमावास्या के दिन यहाँ की पुष्करिणी में स्नान कर भगवान के दर्शन पुण्य प्रदायक है। रोग मुक्त हो जाते हैं। भगवान का एक और नाम वैद्यवीरराघवन है। यहाँ श्रीनिवास पेरुमाल एवं वराह स्वामी के मंदिर हैं।

मंगलाशासन - 2 आल्वार; कुल 12 दिव्य पद।

क्रमशः

(गतांक से)

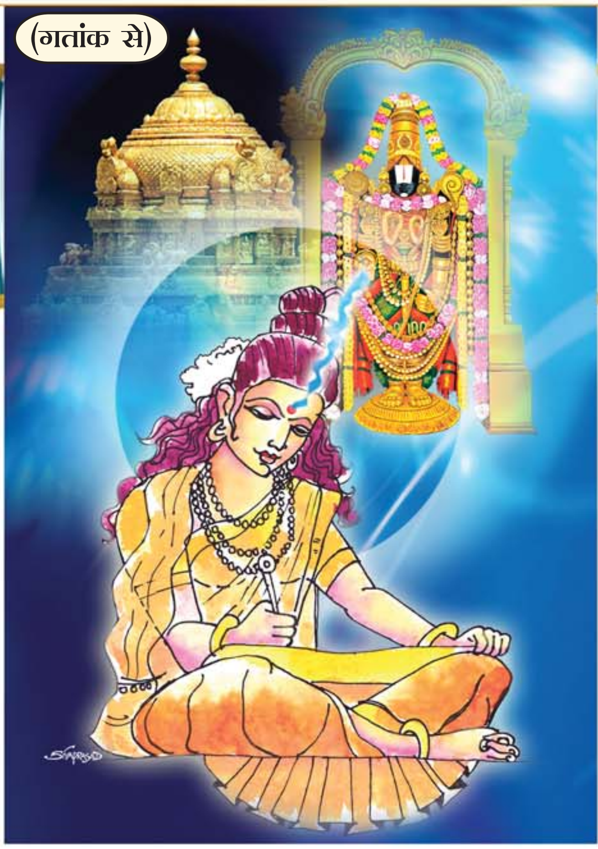

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

तृतीय आश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

1. बाह्य लक्ष्य :

बहिर्नासिकाग्र का अवलोकन करते मनो मारुतों से मिल कर स्थिर रखकर, उस में चतुरवर्ण प्रमाण से नैल्यम को, षटवर्ण प्रमाण से धूम्र को, अष्टांगल प्रमाण से रक्त को, दशांगुल प्रमाण से तरंग प्रभा को, द्वादशांगुल प्रमाण में भीत को प्राप्त होता है। ये पांचों पंचभूत के वर्ण बन कर सामने आने पर अपांग द्रष्टा बनकर, उन्हें शीर्ष के ऊपर रख कर निश्चल चित्त बनाकर देखने पर चंद्र प्रभा दिखाई देती है। इस के अतिरिक्त कान, नासापुट, नेत्र मार्ग से उंगलियों में रहने से निष्ठा के साथ चित्त को वहाँ पर स्थिर करने से प्रणव नाद को सुन सकते हैं। प्रकट दीप कलाएँ, नवरत्न कांति भी दिखाई पडती है।

यह आत्म प्रत्यय प्रकाशित बहिर्लक्ष्य है। अब मध्य लक्ष्य विधान कैसा है? सुनो।

2. मध्य लक्ष्य :

आंखों की दोनों पुतलियों को स्थिर करके मन से भ्रूयुग मध्य में घुसा कर उस के मध्य में रहनेवाले सूक्ष्म बिल में प्रवेश करके देखने पर उस में बिजलियाँ, नक्षत्र, शशि प्रभाएँ, भूतति वर्ण आदि मिले चमकने का भाव पैदा होता है। इस के अतिरिक्त सतत शून्य आकाश, निपट अंधकार से भरे महाकाश, कालाग्नि से भरे पराकाश, अधिक प्रकाशवान तत्वाकाश, कोटि भानु तेज सूर्याकाश नामक ये पाँच आकाशों को देखनेवाला तन्मय होकर निरावकाश के समान बनता है। यह मध्य लक्ष्य है। अब अंतर्लक्ष्य इस प्रकार है।

3. अंतर्लक्ष्य :

अपावक, चंद्रार्कव्याप्त, पंचभूतवर्ण कलित अपज्योति बिल रूपाश्रय के रूप में प्रज्ञानवान को दिखाई देता है। वह नेत्रों के मध्य में परमाक्षर हिरण्य सच्चिदामृतांकुर गवाह होने से बाह्यांतर में देखते हुए नित्य सुख को प्राप्त करता है। वह अमृतांकुर युगल नायक बन कर स्पटिक रुचियों के साथ जीव को प्राप्त होता है। इस रहस्य को सद्गुरु के उपदेश क्रम में जान कर बाह्यांतर के बीच में

श्रृंगाटक के पास ओंकार से दीपित नीवार शुंकाणु के रूप में रहनेवाले सगुण पंचक को देखना तारकांतर्लक्ष्य होता है। इससे बढ कर सरस्वती नाडी चंद्रप्रभावित होकर मूलकंद के पास रहते दीर्घास्ति मध्य में तंतु के रूप में विद्युतकोटी के रूप में प्रकाशित होता है। वह ब्रह्मरंध्र तक व्याप्त होकर, ऊर्ध्वगामिनी होकर सर्वसिद्धिप्रद बनता है। उस स्वरूप को आत्मा के अंदर अनुभव करते हुए फालोर्थ मंडल में स्वरूप के अंदर लक्ष्य को रखकर देखना ही परमांतर्लक्ष्य है। सदा भवतारक्य अभ्यास करने से मन में मारुत अंतरंग में निर्मग्नत्व को प्राप्त करता है। उस के अनुकूल अंतरात्मा परमात्मा के आनंद को प्राप्त करती है। अब अमनस्क योग के बारे में बताऊंगा। सुनो।

4. अमनस्क योग (शांभवी मुद्रा) :

आत्माश्रय को हंस मार्ग के दाएँ और बाएँ ललित नील कांति से उदक ज्योति में भास्वर दर्पण छाया के होने से वह दीपित होकर उस के मध्य में सूक्ष्माति सूक्ष्म सुषिर को मन में लाने से अंतर्लक्ष्य बाह्य दृष्टि के रूप में अवगत होता है। वही घन शांभवी मुद्रा है। दो यामों तक बैठ कर इस का अभ्यास करने से मन में अनिल गति प्राप्त होती है। एकाग्र भाव भी पैदा होता है।

राजयोगी का अपूर्व अनुभव :

सुनने को, बोलने को विविध विचित्र विचारों को अपने आप में ही रोक कर, परमात्मा के अंदर की अंतरात्मा के बारे में विचार करते हुए उसी में लीन होने से महादीप के रूप में ज्ञान प्राप्त होता है। उससे अंदर ही एक रूप, एक नाद सुनायी देना ही खेचरी मुद्रा है। तब अचलित आनंद के अनुभव करते हुए वर मनोन्मनी, तन्मय अवस्था को प्राप्त करके चलनरहित मन को प्राप्त करता है। वह राजयोगी तब अजाड्य निद्रा और योग निद्रा दोनों को प्राप्त करता है।

ऐसे राजयोगी को जागृत, स्वप्नन, सुषुप्ति, तुर्य, तुर्यातीत नामक पांचों अवस्थाएँ होती हैं। वे कौन सी हैं? चतुर्विंशति, चत्वात्मक देह, अपने द्वारा नही देखे गए पंचविंशक देह को जानकर सावधान होता है। मन को इंद्रीय बृंद के साथ आत्मा को खडा करके ध्यान करने से, उस के मन में सर्वविषय वासनाएँ दूर होकर बहिर्मुख में सपने की तरह उसे अपने आप में ढूंढता रहता है। इसे अभ्यास करनेवाला मन मायाजाल में न पड कर, यह मायाजाल अनित्य मानते सत्य वस्तु को प्राप्त करता है। उसका मन बहिर्ज्ञप्ति के द्वारा इसे बोध कराना ही सुषुप्ति है।

जीवेश्वर भाव को प्राप्त करनेवाली आत्मा में स्थिर मन बाह्यभाव रहित बन कर पर को प्राप्त करता है। इस प्रकार पुरुष और पुरुषोत्तम उभय भावों की चेतना को प्राप्त करता है। मन में विषय-वासना विमुख होकर सर्वेंद्रीय व्याप्त से देहाभिमान को छोड देता है। विरक्ति भाव में संसारिक बंधनों से मुक्त होकर आत्मानुभव से अमृत को प्राप्त करता है। तब वह तन्मयत्व और स्वतंत्र को खोकर आत्मा परतंत्र बनती है। तब जीव स्वतंत्र होकर ईश्वर के अधीन होते समय उस में ईश्वर का भाव सत्य हो जाता है। तब सर्वव्याप्त सर्वेश्वर पर मन केंद्रित होता है। तब मन जहाँ तक आत्म दृश्य को देखता है वहाँ तक वह मनोन्मनी होता है।

जब द्रष्टा, दृक और दृश्य तीन अलग अलग न होकर एक हो जाते हैं, तब ध्यान युक्त आत्मा मन में परमात्मा का अनुभव करती है। तब मन के होते हुए भी परमात्मा अलग अनुभव होता है। यह तन्मयवस्था ही तुरीय अवस्था है। वह स्वानुभाव से परमपद बनता है। तब सहज ही मन सकलेंद्रीय के साथ लीन हो जाता है। यह अमनस्क तुरीय अवस्था है।

होने को नहीं है कहना, घटकाश को महाकाश में देखना, देश, काल, कार्य, कतृ, कारण, गुरुत्व, लघुत्वादवस्था के रूप में न लगने से वह सहज मनस्क अवस्था है। आदान-प्रदान रहित, अकथित, सहज भाव के रूप में होना अजाड्य निद्रा है।

अंतहीन सागर की तरह, आद्यांत रहित आकाश की तरह ईश्वर अदृश्य शक्ति से सब जगह रहता है। हवा में, गंध में, वृक्ष में, अनल में, अग्नि में, माधुर्य में, क्षीर में, घी में, तेल में सब रूप में चराचर सृष्टि में परमात्मा के परिपूर्ण रूप का अनुभव करना ही योगनिद्रा है। यह अल्प साधकों को अनुभव में नहीं होता है। इसे जो योगी अनुभव करता है, वह अनुभव गूँगे के गुड की तरह है। कुछ बोला नहीं जा सकता है। वह ऐसा है कि ब्रह्म अद्वैत वस्तु के रूप में शास्त्र बनता है। 'ब्रह्म' कहने मात्र से ब्रह्म नहीं होता है? ब्रह्म रूपी गुरु स्वरूप को मन में रखकर अपने आप ब्रह्म समझने के काल में ही ब्रह्म का बोध होता है। इस प्रकार मानस में गोचर होनेवाला ब्रह्म ही राजयोग है। राजयोग में बताये गए मंत्र, लयादि योग अनुभव में होता है। उस का क्रम ऐसा है।

मंत्र, लयादि योगों का अनुभव क्रम :

मंत्र के योग से मारुत संचार देह का रहस्य मालूम होता है। लय के द्वारा अपने अंदर के ललित प्रणवनाद सूत्र को मन में जप कर सकते हैं। हठ से, जरा से, रोगों से, मृत्यु से क्रीडा करके उन्हें जीत सकते हैं। दारक से अपने आप में दीपित होनेवाले को पहचान सकते हैं। उचित राजयोग से परब्रह्म को प्राप्त करके पूर्णत्व को प्राप्त कर सकते हैं। सुनो! मंत्र योगी से लय योगी महान है। लय योगी से अधिक उल्लसित हठयोगी

महान है। हठयोगी से अधिक सरस मनवाले सांख्य योगी महान है। उससे भी दारक योगी महान है। उससे भी सांख्य, तारक को संग्रहीत करनेवाले, वैराग्य भाव से रहनेवाले राजयोगी उत्तमोत्तम है। अवनि में रोजयोगी से बढकर कोई नहीं है। वह अगर परिवार में है, जंगल में है तो भी सकल निर्लेप भाव से शांत भी होता है। इसलिए ऐसे राजयोगी के लक्षणों के बारे में सुनो!

राजयोगी के लक्षण :

देह कांति, मृदुत्व, वाक माधुर्य, मितभाषण, भूत दया, विवेक, शांत चित्त, मिताहार, मनोस्तैर्य, मैत्री गुण रखनेवाला ही राजयोगी है। वह आडंबर, मध्यस्थ, कलुषों से मुक्त रह कर दीपित होता है। अँबुधि मध्य कलश की रीति में सारे दुर्गुणों से अलग रहता है। अलग रहते हुए भी परिपूर्ण होते दीपित होता है। वह एक बार संसारी के रूप में नाटक करता है। एक बार विरागी के रूप में नाटक करता है। हे धरणी! उस के अनुभवों को कोई जान नहीं सकता है।

धर्माधर्म का ज्ञान रखते हुए, कर्मासक्त होकर, सदा निर्मल भाव से मर्मज्ञता के साथ वह व्यवहार करता है। प्राज्ञावान होकर सज्ञनों के देह में रहता है। उस राजयोगी के मन के बारे में नहीं जानते हुए अज्ञानी उस की निंदा करते हैं। दूषण करनेवालों के लिए वह शून्य है। दूषण करनेवाले ही पापी बनते हैं। भूषण करनेवालों के लिए वह पुण्य-फल है। ऐसा निर्लेप भाव वह रखता है।

अपने को महान समझ कर गर्व नहीं करता है। छोटा समझ कर आत्मन्यूनता का शिकार नहीं होता है। अधिक भाग्य होने से फूलता नहीं है। कभी दारिद्रय से व्याकुल भी नहीं होता है। प्रारब्ध को भोगे बिना कोई रास्ता नहीं समझकर एक रस से सुख-दुःखों को भोगता है। जलज पत्र पर जल की तरह सभी सांसारिक गुणों से अलग रहता है।

जगत में कंदमूलों के कटने से जैसे वे कुछ दिन ताजा रहते हैं, देह मूल से होनेवाले कारण विद्यादि के दूर होने से भी राजयोगी जीवित रहता है। कारण मालूम होने पर भी कार्यजाल से मुक्त नहीं होता है। परिपूर्ण चिदात्मा को प्राप्त करके विकारी हुए बिना प्राप्त देह के आश्रय में रहकर, गुण कर्मों में कभी किसी के साथ न रहकर सुख स्वरूप में सदा सब का साक्षी बनता है।

राजयोगी - आत्म यज्ञ :

बुद्धि से, चित्त में अहंकार रहित, मानस में ऋत्विकगण, प्रवण वर्ण को उपस्थंभ के रूप में, प्राण दशेंद्रियों की पंक्ति समूह के रूप में रहने से, भासुर अनहत नाद विहित मंत्र बनने से, मनोविकारों को बोधाग्नि में जलाकर ज्ञानामृत को सोम पान के रूप में राजयोगी प्राप्त करता है।

उस सोम पान को पीकर मोक्ष कांता समेत होकर वेदांत सूत्र कहे जाने वाले कर्ण कुंडलों के दीपित होते त्रिकुट मार्ग से शांति को प्रमुख मित्र के रूप में राजयोगी उपासना करता है।

प्रकटित आचारों की गाडी का सलाखे बनने से, जप तप सुचक्र बनने से, प्राण पंचक गाडी बन जाने से उस की देह निर्मित होती है। कर्ण और नेत्र वाहन बनने से विवेक सारथी बनने से निस्फुहत्व ही त्याग ध्वज बनने से बने रथ पर राजयोगी चढ कर यात्रा करके सर्वस्व को प्राप्त करके, गंगा, यमुना के रुकनेवाले चारों मार्गों के बीच में अवभृथ स्नान करके, इस अवनि में आत्म सोमयाजी के रूप में प्रशंसित होता है।

इतना महान योग पुरुष उच्च या नीच नहीं होता है। संतोष के साथ किसी भी कांता के साथ रहता है। अपने में परमात्मा को देखता रहता है। विभ्रांतियाँ होने पर, निंदा होने पर सिर्फ हँसता ही है, यह शांत राजयोगी बदले में निंदा नहीं करता है। घन सद्गुरु के रूप में दूसरों से प्रशंसित होता है।

क्रमशः

कालोपासना करनेवाले ही कालातीत हैं

तेलुगु मूल - आचार्य राणि सदाशिव मूर्ति *हिन्दी अनुवाद - श्रीमती वी.क़ेदारम्मा*

अनन्त कोटि ब्रह्माण्डों में किसी भी जीव को क्यों न देखो, वह किसी न किसी काम में लगा रहता ही है। समस्त विश्व-व्यापार काल के अधीन रहते हैं। प्रत्येक-व्यक्ति मानता है कि काल अपने हाथ के अधीन रहता है। किन्तु निशित दृष्टि से परखने पर ज्ञात होता है कि काल किसी के अधीन नहीं है। सब के सब काल के अधीन ही रहते हैं।

इस काल-स्वरूप के बारे में कुछ जान लिए तो जीवन सफल बनता है। समूर्तकाल और अमूर्तकाल; काल के दो मुख हैं। काल अनन्त है, अनादि है। काल का कोई रूप नहीं है। काल की गणना कोई भी कर न सकता। वैसा काल, अमूर्तकाल है। याने काल का कोई व्यावहारि रूप नहीं है। समूर्तकाल का मतलब है, कालमान में विविध प्रमाणों का अस्तित्व है।

इस समूर्त काल के अंश, लिप्त, क्षण, निमेष, घड़ी, विघड़ी, दिन, वार, मास, अयन, संवत्सर, कलियुग, द्वापरयुग, त्रेतायुग, कृतयुग, महायुग, मन्वन्तर, कल्प इत्यादि हैं। इस प्रकार अनायास ही काल-प्रवाह को भी गणना करने का श्रेय हमारे प्राचीन भारतीय शास्त्र वेत्ताओं को ही प्राप्त है। वैसा गणना करने के अलावा उनके आधारस्तंभों के रूप में अनेकों महा पुरुषों के नामों से शक-गणना की गयी है। वेदों के आविर्भाव के दिनों से ही काल का मूल्य जानकर प्रवर्तित किया भारतीयों ने।

कालो अश्वो वहति सप्त रश्मिः।

सहस्राक्षो अजरो भूरि रेताः।।

- ऐसा ऋग्वेद कहता है।

यहाँ काल की तुलना अश्व से की गयी। काल रूपी अश्व के सात पगहे हैं। हजार नेत्र हैं। उसे वृद्धाप्यता नहीं है। ऐसा कहा जाता है। बड़ा वीर्यवान है। यह मंत्र, ऋग्वेद के काल-सूक्त में है। काल के सहस्त्र नेत्रों का मतलब है, काल की दृष्टि से कोई बच नहीं सकता। इस काल रूपी अश्व पर

अगस्त 2024

08 नागचतुर्थी
09 गरुडपंचमी
13 मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा वर्धंति
15 भारत स्वतंत्रता दिवस
16 श्री वरलक्ष्मीव्रत
14-17 तिरुमल श्री बालाजी का पवित्रोत्सव
19 श्री हयग्रीव जयंती, राखी, श्री विखनस महामुनि जयंती
20 गायत्रीजपम्
26 श्रीकृष्णाष्टमी
27 गोकुलाष्टमी

अधिरोहित होकर पूर्णकुंभ बन कर भगवान अनेकों रूपों में दर्शन दे रहा है। हम प्रतिनित्य सारी पूजाओं के अवसर पर प्रयोग में लाया जाने वाला पूर्ण-कुंभ साक्षात भगवान ही है; ऐसा इस सूक्त से जान सकते हैं। पूर्ण कुंभ का प्रयोग पहली बार इसी सूक्त में दिखायी पड़ा। समस्त जीवों में, बाहर व्याप्त प्रकाश, आकाश, सबकुछ काल ही है। यह पृथ्वी, आकाश, जल, शक्ति, दिशाएँ... काल के अधीन हो काल-महिमा से ही उद्भूत हैं।

भूत (गुजरा हुआ), भव्य (गुजर जाने वाला)... ये दो काल के अवयव हैं। समस्त जीव, अद्भुतों का आलंबन होनेवाला अनन्त विश्व, इस विश्व का सृजन करके पालन करने वाला देव... सभी काल के ही रूप हैं। काल से उद्भूत समस्त लोक, उनका पालन करने वाले लोक नाथ, फिर से काल के ही गर्भ में चले जाते हैं। ऐसे काल की उपासना करने का उपाय ही यज्ञ है। वह सर्वसिद्धि प्रदायक है। ऐसा काल-सूक्त बताता है।

संसार के प्रत्येक जीव के लिए भूख, एक अनिवार्य विषय है। सभी जीव अपने-अपने अनुकूल आहार स्वीकार करते हैं तो निर्विराम सारे विश्व का भक्षण करता है काल। इस विषय को जानकर अमूर्त रूप में आराधना करने वाले काल के प्रतिनिध बन सकते हैं। समूर्त रूप में काल की उपासना करनेवाले काल के गर्भ में एक बड़े बहुबीज-फल के बीजों की तरह विद्यमान रहते हैं। ऐसा कहा जाता है।

इन विषयों को जानकर जो कालोपासना करते हैं, काल ही उनके वश में रहता है। वे कालातीत बन जाते हैं।

स्वस्ति।

नीति पद्यम्

आन्ध्र देश के कबीर श्री वेमना

(संत वेमना की कुछ चयनित पद्य)

विद्वत्पद्धति

‘कुंड’ ‘गुंभ’ मन्न ‘गोंड’ ‘पर्वतमन्न’
नुप्पु लवण मन्न नोकटे कादे
भाष लिट्लेवेरु परतत्व मोक्कटे
विश्वदाभिरामा विनुरवेमा ।।28।।

लोग ‘पर-तत्व’ को भिन्न-भिन्न भाषाओं में भिन्न-भिन्न नामों से व्यवहृत करते हैं, किंतु वास्तव में तत्व तो एक ही हैं। घड़े को तेलुगु में ‘कुंडा’ और संस्कृत में ‘कुंभ’ कहते हैं और पहाड़ के भी दोनों भाषाओं में क्रमशः ‘कोंडा’ और ‘पर्वत’ नाम हैं। इन नामों की भिन्नता से वस्तु-स्थिति में कोई अंतर नहीं पड़ता है। सच्चा विद्वान ही इस रहस्य को समझता है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

ओंटिमिट्टा, श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर

आंध्रप्रदेश, कडपा जिला, ओंटिमिट्टा प्रांत में विराजित श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर बहुत प्राचीन श्रीराम मंदिर है। इस प्रांत को 'एकशिलानगर' भी कहते हैं। इस मंदिर का निर्माण जांबवंत ने किया। इस आलय से संबंधित दर्शन एवं सेवा का विवरण निम्नांकित हैं।

मंदिर का दर्शन समय

प्रातः 5.00 बजे से रात 9.00 बजे तक भगवान जी को दर्शन कर सकते है।

प्रातः 5.00 बजे से सुबह 7.30 बजे तक दर्शन

सुबह 7.30 बजे से सुबह 8.15 बजे तक प्रथम घण्टानाद

सुबह 8.15 बजे से सुबह 10.30 बजे तक दर्शन

सुबह 10.30 बजे से सुबह 11.15 बजे तक द्वितीय घण्टानाद

सुबह 11.15 बजे से सायं 5.30 बजे तक दर्शन

सायं 5.30 बजे से सायं 6.15 बजे तक तृतीय घण्टानाद

सायं 6.15 बजे से रात 8.45 बजे तक दर्शन

रात 8.45 बजे से रात 9.00 बजे तक एकांतसेवा

भगवान जी का सेवा टिकट विवरण

1) कल्याणोत्सव - रु.1,000/- दो व्यक्ति के लिए, समय सुबह-9.00 बजे को

2) अभिषेक - रु.150/- दो व्यक्ति के लिए, हर शनिवार, समय सुबह-6.00 बजे को

3) स्वर्ण पुष्पार्चन - रु.250/- एक व्यक्ति के लिए, हर रविवार, समय सुबह-8.30 बजे को

सूचना

मंदिर के प्रांगण में स्थित काउण्टरों में (या) ऑनलाइन के माध्यम से भी टिकट प्राप्त कर सकते है। कृपया भेंट हुण्डी में ही डालें।

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित
प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

पत्ता मनिशरै प्पत्ति, अप्पतु विडादवरे
उत्तारेन वुळन्नोडि नैयेनिनि, ओल्लियनूल्,
कत्तार् परवु मिरामानुजनै क्करुदु मुळ्ळुम्
पेत्तार् यवर्, अवरेम्मै निन्नाळुम् पेरियवरे ॥८६॥

क्षोदीयसो मानुषानाश्रित्य तदाश्रयणं क्षणमात्रमप्यविहाय तेष्वेव परबन्धुताबुद्धिं च बध्वा तत्किंकरभावेन तानेवानुधाव्य क्लेशाननुभूतवानहम् इतः परं तादृशक्लेशभाजनं नैव भवितास्मि। उत्तुंगशास्त्रज्ञ सज्ञनसंसेवित भगवद्रामानुजपादाब्जप्रावण्यैकनिरूपणीया महात्मान एव मे शेषिणस्सततम्॥

क्षुद्र मानवों का आश्रयण करके, एक क्षण भर के लिए भी उनका संग नहीं छोडते हुए, उनको ही परमबांधव मान कर, उनके पीछे-पीछे ही दौडते हुए, उनकी सेवा कर मैंने अब तक जो दुःख पाया ऐसा दुःख अबसे नहीं पाऊंगा। श्रेष्ठ शास्त्रों के वेत्ता महात्माओं से संस्तुत श्री रामानुज स्वामीजी का ही अपने मन से ध्यान करनेवाले महात्मा लोग ही अब सदा के लिए हमारे शेषी हैं।

क्रमशः

मिथ की महिला चरित

शर्मिष्ठा विधि वंचिता

- डॉ.के.एम.भवानी

जिंदगी भगवान का दिया हुआ अमूल्य धरोहर है। हर पल की सतर्कता जिंदगी को खुशियों से भर देता हैं, तो जल्दबाजीपन, आवेश जिंदगी को दुखों की घाटियों में धकेल देता है। कभी-कभी एक गलती शाप बनकर जीना मुश्किल कर देती है, तो मानव को उस स्थिति से बचकर निकलने का रास्ता दिखाई नहीं देता है। तो मानव को हालात के वशीभूत होकर कांटों के रास्ते पर ही चलना पड़ता है। विधि राज कुमारी को भी दासी बन कर जीने के लिए मजबूर करती है। ऐसी ही कहानी है दानव राज्य ही राज कुमारी शर्मिष्ठा की, जो पुरु वंश के मूल पुरुष राजा पुरु की माता ही। यह हृदयस्पर्शी कहानी महाभारत में वर्णित है।

शर्मिष्ठा दानव राजा वृषपर्व की पुत्री है। दानव कुल की राज कुमारी है। राजा ययाति की दूसरी पत्नी है।

दानव कुल गुरु शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी और शर्मिष्ठा दोनों दोस्त थीं। वे दोनों एक दिन अपनी सखियों के साथ वन विहार के लिए जाती हैं। वहाँ सब तालाब में नहाते समय अचानक वायु प्रचंडता से बहने लगती है। तो सारी युवतियाँ घबराहट में तालाब से बाहर निकलकर किनारे पर रखे गए कपड़े पहनने लगती हैं। तब जल्दबाजी और अनजाने में शर्मिष्ठा देवयानी के कपड़े पहनती है। इस विषय पर शर्मिष्ठा और देवयानी के बीच में संवाद चलता है। अंत में शर्मिष्ठा गुस्से में आकर देवयानी को वहाँ उपस्थित कुएँ में धकेलकर चली जाती है।

देवयानी की चिल्लाहट को सुनकर उस वन में शिकार करने आया राजा ययाति देवयानी को कुएँ से बाहर निकालकर उसकी जान बचाता है।

देवयानी शर्मिष्ठा द्वारा की गई यह अपमान और घटना को सह नहीं पाती है और वह वृषपर्व के राज्य में कदम नहीं रखने की प्रतिज्ञा करती है तो उसके पिता शुक्राचार्य भी उसीके साथ राज्य की सीमा से बाहर कानन में रहने को तैयार हो जाता है। राजा वृषपर्व गुरु शुक्राचार्य से वापस राज्य में आने की प्रार्थना करने लगता है तो गुरु शुक्राचार्य अपनी पुत्री देवयानी की चाह पूरा करने को कहता है। तब देवयानी राज्य में वापस कदम रखने के लिए यह शर्त रखती है कि राज कुमारी शर्मिष्ठा अपनी हजारों दासियों के साथ जिंदगी भर देवयानी की दासी बनकर रहने को राजी होती है, तो तभी वह गुस्सा छोडकर दानव राज्य में वापस आती है। दानव कुल को गुरु के क्रोध से बचाने हेतु शर्मिष्ठा देवयानी की चाह पूरा करना चाहती है। दासी बनकर जीने को तैयार हो जाती है। यह शर्मिष्ठा का (राजकुमारी होने के नाते) कर्तव्य और जिम्मेदारी का महत्वपूर्ण उदाहरण है। पछतावे का द्योतक है। अपनी गलती को मानने का सुसंस्कार है।

जब देवयानी राजा ययाति से शादी करके ससुराल जाती है, तब शर्मिष्ठा को भी साथ ले जाती है। कुछ समय के बाद देवयानी माँ बन जाती है। देवयानी को अपने पुत्रों के साथ खुशी से रहना देखकर शर्मिष्ठा व्यथित हो जाती है। नारी सुलभ सहज मातृत्व भावना उसमें जागृत हो जाती है। वह राजा ययाति से

मिलती है और उसे पत्नी के रूप में स्वीकार करने की प्रार्थना करती है।

वह राजा से कहती है कि "हे राजा! आप मेरी स्वामिनी का पति है। इसलिए उसकी दासी होने के नाते आप मेरे भी पति है। वास्तव में यह धर्म सम्मत भी है।" तब ययाति उससे कहता है कि शादी के समय शुक्राचार्य ययाति से यह स्पष्ट कह देता है कि वह शर्मिष्ठा को सारी सुविधाएँ उपलब्ध कराना है, लेकिन उससे कोई रिश्ता नहीं रखना है।

इस बात को याद दिलाते हुए ययाति शर्मिष्ठा को इनकार करता है लेकिन शर्मिष्ठा ययाति से कहती है कि वह कभी भी देवयानी को उसके अधिकारों से वंचित नहीं करती है। हमेशा देवयानी ही ययाति की पत्नी है। शर्मिष्ठा सिर्फ ययाति के बच्चों की माता बनना चाहती है। ययाति उत्तम राज वंशज होने के कारण शर्मिष्ठा की चाह धर्म विरुद्ध नहीं है।

इस प्रकार शर्मिष्ठा और भी कई धर्म संबंधित बातों को बताकर धर्म बद्ध ययाति को अपनी चाह पूरा करने को मनाने में सफल हो जाती है और वह ययाति के बच्चों की माता बन जाती है। जब देवयानी इस बात को जानती है, तब वह बहुत क्रोधित होकर फिर अपने पिता शुक्राचार्य के पास जाकर सारी बातें बताती है। शुक्राचार्य लाड़ली बेटी की दुख को देख नहीं पाता है। अपनी पुत्री को धोखा दिया दामाद को तुरंत यौवन खोकर बूढे बन जाने का शाप देता है। फिर ययाति माफी माँगने पर शुक्राचार्य कहता है कि ययाति के पुत्रों में कोई उसकी बूढेपन को लेने को तैयार होता है तो फिर ययाति यौवन स्थिति में आ जाता है।

तब राजा ययाति अपने सारे पुत्रों को बुलाकर पूछता है तो शर्मिष्ठा से उसे प्राप्त पुरु नामक पुत्र पिता के लिए अपने यौवन त्यागकर बूढे बनने को तैयार हो जाता है। ययाति बहुत साल सुख भोग करके अपने बूढेपन को वापस लेता है तो पुरु फिर यौवन दशा को पाता है। ययाति अपने पुत्र की त्याग पर बहुत प्रसन्न होकर उसे ही अपने उत्तराधिकारी घोषित करता है। पुरु के राजा बनने से शर्मिष्ठा राज माता बन जाती है।

इस प्रकार शर्मिष्ठा की जिंदगी राज कुमारी के रूप में उत्थान से शुरू होकर, एक गलती के कारण दासी बनकर पतन हो जाती है।

संयम, कर्तव्य निष्ठा और धर्म पालन के कारण राज माता के रूप में फिर ऊपर चढ़ती है लेकिन यह स्पष्ट संदेश देती है कि कभी भी, किसी भी हालत में मानव को अपना संयम खोना नहीं चाहिए।

मई-2024 महीने का क्विज-22 के समाधान

1) नर्मदा नदी, 2) तिरुपति तातय्यगुंटा गंगम्मा,

3) वैशाख माह शुक्ल पक्ष तृतीया तिथि

4) श्री महाविष्णु, 5) नरसिंह स्वामी,

6) पुष्कल विमान, 7) गौरीतटाक,

8) रुक्मिणी-सत्यभामा,

9) पुरुष सूक्त विमान, 10) श्री बालाजी

11) कूर्म जयंती, 12) वंशधारा,

13) भगवान शिव, 14) क्षीर सागर,

15) Areca cattechu.

तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामीजी का ज्येष्ठाभिषेक महोत्सव

दिनांक	वार	उत्सव
16-07-2024	मंगलवार	ज्येष्ठाभिषेक प्रारंभ
17-07-2024	बुधवार	कवच प्रतिष्ठा
18-07-2024	गुरुवार	कवच समर्पण

श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामीजी का साक्षात्कार वैभवोत्सव

तेलुगु मूल - श्री जे.बालसुब्रह्मण्यम्
अनुवादक - डॉ.जी.शेक षावली

अखिलांड कोटि ब्रह्मांड नायक, समस्त लोकों के पालनहार, और जगत् रक्षक श्रीनिवास स्वामीजी शेषाचल तिरुमल पर्वत पर और इस पर्वत के चरणतल में भी प्रत्यक्ष हुए है। कहकर, सौ वर्षों से पीढ़ी-से-पीढ़ी सुनते आरहे हैं।

तिरुपति से पश्चिम दिशा के दस किलोमीटर के दूरी पर, एक छोटा-सा गाँव, उस गाँव के बाहर टूटा-फूटा हुआ गोपुर और उसकी खंडहर दीवारे शिथिलावस्था में रहा एक मंदिर है। ऐसी दीनावस्था में पड़ा मंदिर के प्राकार, गोपुर का शिखर, बलिपीठ, ध्वजस्तंभ, धूप - वर्षा में तडपता हुआ, दिखाई देनेवाला यह मंदिर भक्तों के दिल को टुकडे-टुकड़े कर निचोड़ कर देता था। मंदिर के चार प्राकारों के बीच में स्थित शिला पर निर्माण किया गया प्रधान मंदिर के दीवारों पर रहे प्रतिमाएँ मुग्ध मनोहर लग रहे थे। मंदिर के सभी द्वार टुकडे-टुकडे हो गए थे। कई भक्तों को इस खंडहर मंदिर के गर्भालय में प्रवेश करने की इच्छा होने पर भी मंदिर में जाने के लिए हिम्मत नहीं कर पाते थे।

सन् 1900 ई. में इसी गाँव में एक चमत्कार हुआ- कई से एक तायारम्मा नामक नादान और पागल जैसी स्त्री इस खण्डहर मंदिर के प्रांगण में प्रत्यक्ष हुई। भगवान जी को पहचान कर मंदिर का साफ-सुधार कर लिया। भिक्षाटन के रूप में आनेवाले चीजों से भगवान जी को समर्पण कर, बचा अन्नप्रसाद वहाँ के ग्वाल बालों को बांटकर बचा-हुआ प्रसाद स्वयं खाती हुई अपना जीवन व्यतीत करती थी। मंदिर को साफ-सुधार करना, दीप जलाकर-अभिषेक करना नित्यकृत्य हो गया है। इस प्रकार 40 साल तक इस मंदिर में हुआ है।

एकदिन अचानक तायारम्मा घर-घर जाकर, ''मैं कल से भिक्षा के लिए, घर-घर नहीं आऊँगी। कई से एक स्वामीजी इस गाँव में आएँगे, वे श्रीनिवास स्वामीजी को मंत्रोच्चारण से अर्चन करेंगे। उसी क्षण से मंदिर का वैभव दिन दुनी रात चौगुनी की तरह समस्त भूलोक में मंदिर का वैभव फैल जाएगा। मुझे भगवानजी तुंबुरु तीर्थ में जाकर तपस्या करने के लिए आदेश दिया है कहकर गाँव वालों को बताकर चली गयी है।'' दूसरे दिन सबेरे ही मंदिर के पास कांची क्षेत्र के, एक स्वामीजी प्रत्यक्ष होकर लोगों से कहा कि- हे भाईयों! ''मैं कांची से आया हूँ। मेरा नाम सुंदरराजस्वामी है। मेरे पिताजी का नाम राघवेंद्राचार्युलु है। हर रात और दिन श्रीनिवास स्वामीजी मेरे स्वप्न में आकर, मुझ से कहते थे कि - हे सुंदरराज, उठ! निकल। जल्दी मेरे पास आजा! मेरा उद्धार कर! मैं अंधेरे में पड़ा हूँ। मेरे चारों और कंटीले पेड़-पौधों से भरे बिल में पडा हूँ। मैं स्वामीजी से पूछने पर, गाँव का नाम नहीं बताते थे। इसलिए मैं तिरुपति यात्रा के लिए, गाँव-गाँव, शहर-शहर, हर किला घूमता हुआ, खंडहर श्री वेंकटेश्वरजी के मंदिर के लिए ढूँढता आ रहा हूँ। मैंने कल रात में इसी खंडकर मंदिर के प्रांगण में सोगया तो, भगवानजी स्वप्न में आकर कहा कि-

हे सुंदरराज! तुम जहाँ सोये हो मैं इसी गाँव के मंदिर में सौ सालों से रहा हूँ। मेरा उद्धार कर! शास्त्रों के अनुसार अर्चना कर कहकर स्वामीजी ने मुझे आदेश दिया है। ''गाँव वालों ने तायारम्मा की बात स्मरण कर, खुशी से सुंदरराज ब्राह्मण का स्वागत कर, सारे गाँव वाले एकत्रित होकर खंडहर मंदिर को साफ कर उसका उद्धार किया है।

सन् 1940 विक्रम नाम वर्ष आषाढ़ मास, शुद्ध सप्तमी, गुरुवार, उत्तर फल्गुनी नक्षत्र का शुभदिन। श्रीनिवास स्वामीजी ने सुंदरराज पुजारी को स्वप्न में साक्षात्कार हुआ हैं। इसी तिथि को स्मरण रखते हुए, गाँव वालों ने मिलजुलाकर, हर वर्ष 'श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामीजी' के ''साक्षात्कार वैभवोत्सव'' बहुत धूम-धाम से मनाते आरहे हैं।

सौ वर्षों के बाद पुजारी सुंदरराज के करकमलों से इस गाँव में श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामीजी का प्रथम अर्चना, संप्रोक्षण किया गया है। श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामीजी के गर्भालय के आगे हजारों वर्षों तक योग समाधि में रहे श्रीनिवास स्वामीजी को जागृत करने का प्रयास किया गया। पुजारीजी ने पुरुष सूक्त, श्री सूक्त, भूनील सूक्तियों के पठन से अभिषेक द्रव्यों से मंगलप्रद अभिषेक किया है। स्वर्ण जठित सफेद उत्तरीय से अलंकृत किया है। ललाट पर सफेद पीला कर्पूर से तीन नामम लगाये हैं। विभिन्न प्रकार के फूलों से अत्यंत शोभायमान रूप से सुशोभित किया है। सहस्र नामार्चन, धूप-दीप नैवेद्यों से, कर्पूर आरतियों से, स्वामीजी की विशेष अर्चना होने लगी। प्रप्रथम - सन् 1940 जुलाई 11वी तारीख को विक्रम नाम वर्ष, आषाढ़ मास, शुद्ध सप्तमी, गुरुवार, उत्तर फल्गुनी नक्षत्र में, श्रीनिवास - मंगापुरम्, श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामीजी की अर्चना में गाँव वालों के साथ-साथ आस-पास के गाँव वालों ने, अत्यंत भक्ति-श्रद्धाओं से भाग लेकर, एक त्योहार के रूप में मनाये हैं। उस दिन से लेकर आज तक दिन-बा-दिन मंदिर का विकास बढ़ता गया है।

सन् 1967 अप्रैल 26वी तारीख को तिरुमल-तिरुपति देवस्थान का संस्थान के अंतर्गत आ गया है। इस मंदिर में सन् 1980 ई. जुलाई से हर वर्ष तीन दिन तक श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामीजी के साक्षात्कार वैभवोत्सव मनाते आरहे हैं। उस दिन से स्वामीजी को नित्योत्सव, वारोत्सव, मासोत्सव, वार्षिक उत्सवों से 'तीन फूल छे फलों' के रूप में मंदिर का वैभव संपूर्ण विश्व में फैल गया हैं। इस मंदिर में चलने वाले नित्य कल्याण में, भाग लेकर स्वामीजी का 'कल्याण कंकण' बांध लेने से शीघ्र कल्याण घड़ी प्राप्त होती है कहकर लोगों का पूरा विश्वास है। इसी कारण यह मंदिर (विवाह होने के लिए) सुप्रसिद्ध हो गया है।

आकाशराजा की सुपुत्रिका पद्मावती से श्रीनिवास स्वामीजी का विवाह के बाद वे तिरुमल जाने के लिए तैयार होकर इसी स्थान पर आते हैं। महा तपस्वी अगस्त्य मुनि के आदेशानुसार स्वामीजी पत्नी पद्मावती समेत छे मास इसी स्थान पर रह गये हैं। क्योंकि शास्त्रों के अनुसार विवाह के बाद छे मास पर्वतारोहण करना मना है। अगस्त्य मुनि के वचनों का पालन करते हुए, छे मास उसी प्रांत में रह गए है। इसी कारण इस गाँव का नामकरण - 'श्रीनिवासमंगापुरम्' रखा गया है।

सन् 1540 ई. में विजयनगर राज्य के राजा अच्युतरायलु जी ने इस ग्राम को ताल्लपाका अन्नमाचार्यजी के पोते चिन्नना को मंदिर के उद्धार के लिए दान में दे दिया है। इसलिए आज भी मंदिर के प्रवेश द्वार के दोनों ओर अन्नमय्या और पेद तिरुमलय्या की प्रतिमाएँ देख सकते हैं। अगस्त्यादी कई महान महर्षियों की तपोभूमि के रूप में, जगत् कल्याण के दंपति श्री पद्मावती-श्रीनिवास निवास किये हुए परम पवित्र दिव्य क्षेत्र के रूप में, नित्यकल्याण-हरे तोरण से नित्य सुगंध प्रदान करने वाला यह आध्यात्मिक क्षेत्र न भूतो न भविष्यति है। यह मंदिर तिरुमल की पैदल यात्रा 'श्रीवारिमेट्टु' नाम से सुप्रसिद्ध हुआ है। इस पुण्य क्षेत्र का दर्शन करेंगे तो अपने जीवन में समस्त शुभ हमें प्राप्त हो जाएँगे।

नूतन कार्यनिर्वहणाधिकारी (गौरव संपादक) जी को स्वागत! सुस्वागत!!

श्री जे.श्यामला राव, आई.ए.एस., कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

विश्व प्रसिद्ध तिरुमल तिरुपति देवस्थान के नूतन कार्यनिर्वणाधिकारी के पद में श्री जे.श्यामला राव, आई.ए.एस., जी को नियुक्त किया। इन्होंने गतकाल में आं.प्र. राज्य के उच्च शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव के पद में कार्य किये।

दि. 16-06-2024 को तिरुमल श्री बालाजी के मंदिर में स्थित रंगनायक मंडप में तिरुमल तिरुपति देवस्थान के कार्यनिर्वणाधिकारी पद के कार्यभार को स्वीकार किया।

तदनंतर इन्होंने धर्मपत्नी सहित श्री बालाजी का दर्शन किया। इसके बाद रंगनायक मंडप में वेद पंडित वेदाशीर्वचन किया। इस संदर्भ में ति.ति.दे. के संयुक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री वी.वीरब्रह्मम्, आई.ए.एस., जी ने नूतन कार्यनिर्वहणाधिकारी जी को भगवान जी के तीर्थ-प्रसाद व चित्रपट को प्रदान किया।

उसी दिन तिरुमल में क्यू लाइन, नारायणगिरि षेड्, वैकुंठम् क्यू कांप्लेक्स, मातृश्री तरिगोंडा वेंगबांबा अन्न प्रसाद भवन केंद्र को अचानक जांच किया है। तदनंतर अन्न प्रसाद केंद्र में भोजन किया। उन्होंने वहाँ मौजूद भक्तों की राय जानने और उसके अनुसार कार्रवाई करने का अधिकारियों को निर्देश दिया।

इन्होंने सप्तगिरि आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका के 'गौरव संपादक' भी है। इस संदर्भ में 'सप्तगिरि' की ओर से हार्दिक शुभ-कामनाएँ।

श्री प्रपन्नामृतम्

(49वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

(गतांक से)

श्री कूरेशस्वामी और कृमिकण्ठ का विवाद

किसी समय एक श्रीवैष्णव महात्मा यतिराज श्री रामानुजाचार्य के दर्शनों की इच्छा से श्रीरंगम् से चलकर श्रीनारायणपुर में आया। यतिराज ने उससे अपने प्रिय शिष्य श्री कूरेशाचार्य और आचार्य श्री महापूर्णाचार्य स्वामीजी के सम्बन्ध में समाचार पूछा। उक्त दोनों महानुभाव चोलनरेश के यहाँ गये हुये थे। इसके उत्तर में श्रीवैष्णव महात्मा ने बताया कि जब वे दोनों महानुभाव चोलनरेश के दूतों के द्वारा उसकी राजसभा में उपस्थित किये गये तो वह श्रीवैष्णव द्वेषी राजा उनके प्रति कठोर शब्दों का प्रयोग करते हुये बोला कि- ''लिखो! भगवान शिव से बढ़कर संसार में अन्य कोई श्रेष्ठ तत्व नहीं है।'' राजा के द्वारा ऐसा कहने पर श्रीकूरेश ने धैर्यपूर्वक कहा- वेद-स्मृति, पुराण एवं इतिहास आदि से यह बात स्वतः सिद्ध है कि संसार में भगवान श्रीमन्नारायण ही परतत्व हैं। उनसे बढ़कर संसार में अन्य कोई नहीं है। वे संसार के कारण, जगत के धन करने योग्य देवता एवं मोक्ष प्रदाता हैं। सूर्य, चन्द्र, नवग्रह आदि उन्हीं के अनुशासन से विचरण करते हैं, और सभी देवता, इंद्रादि दिक्पाल सागरों के साथ उन्हीं के आदेश का पालन करते हैं। ब्रह्म भगवान श्रीमन्नारायण के पुत्र हैं, रुद्रादि देवता उनके पौत्र हैं। हे राजन्! भगवान् श्रीमन्नारायण के पादपद्म से उत्पन्न पतित पावनी गंगा के पावन जल द्वारा ब्रह्म ने भगवान का चरण पखारा था, और उसी नारायण के चरणोदक को महादेव ने अपने मस्तक पर धारण किया था। अब आप ही विचार कीजिये कि भगवान श्रीमन्नारायण, पितामह ब्रह्म, महादेव शंकर - इन तीनों में श्रेष्ठ कौन है? यह सुनकर समस्त राज्यसभा एवं महाराज चोल पूर्णतः मौन हो गये।

तत्पश्चात् पुनः कूरेश ने कहा कि- ''भगवान् त्रिविक्रम श्रीमन्नारायण के चरणकमलों से निकली हुई गंगा के जल संयोग से भगवान् शंकर ने कापालित्व एवं शवधारित्व दोषों से रहित होकर कल्याणकारी शिष्यत्व प्राप्त किया।''

यह सुनकर चोल नरेश बोला कि- ''विद्वान होने के कारण आपने बहु वक्तृता प्राप्त कर ली है। लेकिन

मुझे इससे कोई प्रयोजन नहीं है। मुझे तो बस मात्र इतना लिखकर दे दीजिये कि भगवान शिव से बढ़कर कोई परतत्व नहीं है। जब राजा ने इस प्रकार के बारम्बार आग्रह किया तो महात्मा कुरेशजी ने अपनी भगवान के प्रति अनन्यता के कारण ऐसा लिखना ठीक नहीं समझा और राजा के द्वारा प्रदत्त लेखनी से (शिवात्) सेर से (परम्) बढ़कर (द्रोणः) पसेरी होता है - लिख दिया।

यह देखते ही भगवान का विरोधी राजा क्रोधित हो गया और अपने सिपाहियों को आदेश दिया कि इन दोनों के नेत्र निकाल लिये जायें। राजाज्ञा से श्री महापूर्ण स्वामी और महात्मा श्री कूरेशाचार्य दोनों के नेत्र निकालकर उनको नेत्रहीन कर दिया गया। अत्यन्त वृद्ध होने के कारण

महापूर्णाचार्य स्वामी इस असीम वेदना को सहन नहीं कर सके।

अतः वे दोनों वहाँ से श्रीरंगम् के लिये प्रस्थित हो गये, मार्ग में श्री महापूर्णाचार्य स्वामी की हालत अत्यन्त चिन्ताजनक हो गयी और वे श्री कूरेशाचार्य की गोद में सिर एवं अपनी पत्नी के अंक में अपने चरण रखकर लेट गये। जीवन के अन्तिम काल में इस अपरिचित स्थान पर अन्तिम श्वास लेते हुये श्री महापूर्णाचार्यजी से श्रीकूरेश ने कहा कि- ''हम इस समय आपत्ति में हैं फिर भी किसी प्रकार श्रीरंगम् पहुँच जायें तो अच्छा है।''

यह सुनकर श्री महापूर्णाचार्य ने कहा कि- ''मैं यदि शरीर त्याग करने के लिये इस समय श्रीरंगम् में पहुँच जाऊँगा तो लोग यही कहेंगे कि देह त्याग करने की इच्छा से यहाँ आया है। इस तरह प्रपन्न श्रीवैष्णवों के द्वारा मैं सशंकित दृष्टि से देखा जाऊँगा। अर्थात् वे लोग यह समझेंगे कि श्रीरंगम् में देह त्याग करने वालों को ही मोक्ष मिलता है। जो लोग अन्यत्र शरीर त्याग करते हैं, वे मोक्ष के अधिकारी नहीं है।'' यह कहकर उन्होंने वहीं पर अपना शरीर त्याग करने की इच्छा प्रकट की, और फिर उन्होंने कहा कि ''सर्वथा आचार्यदेव के परतन्त्र रहने वाले महात्मा श्रीवैष्णवों के शरीर त्याग के सम्बन्ध में स्थान तथा समय का कोई नियम है।'' श्रीकूरेश से यह कह करके अपने आचार्य श्री यामुनाचार्य स्वामी के चरणकमलों का ध्यान करते हुये उन्होंने शीघ्र ही परमपद की प्राप्ति की।

इस प्रकार से जीवन के 105 वर्ष तक श्री महापूर्णाचार्य स्वामी ने इस लीला-विभूति में रह करके अन्त में भगवद्धाम वैकुण्ठ-लोक को प्राप्त किया।

श्री महापूर्णाचार्य स्वामी के वैकुण्ठवास के बाद प्रपन्न श्रीवैष्णवों के वैकुण्ठ प्रयाण के सम्बन्ध में स्थान एवं समय का कोई भी महत्व नहीं है। आपके वैकुण्ठवास के बाद में

फिर आपके सुपुत्र एवं अन्य श्रीवैष्णवों के द्वारा अंतिम संस्कार, श्रीवैष्णव ब्रह्ममेध विधिपूर्वक सम्पन्न कराकर फिर श्रीकूरेश स्वामी श्रीरंगम् आ गये और यहाँ आकर आपने श्रीरंगनाथ भगवान से निवेदन किया कि- "हे नाथ! आपने आचार्य श्री महापूर्णाचार्य स्वामीजी को तो मोक्ष प्रदान करा है, लेकिन मैं अभी तक आपकी इस कृपा से क्यों वंचित रह गया हूँ?" यह कहकर विलाप करने लगे।

श्रीरंगम् से आगन्तुक श्रीवैष्णवों के मुख से आचार्य महापूर्ण स्वामी एवं कूरेशजी का वृत्तान्त सुनकर यतिराज श्री रामानुजाचार्य अत्यन्त दुःखित हुये।

तत्पश्चात् यतिराज ने अपने आचार्य श्री महापूर्णस्वामी के अन्तिम संस्कार सम्बन्धी श्रीचूर्ण का विधानतः पालन कर, यादवाद्रि के ऊपर श्रीयदुशैलनाथ भगवान की सन्निधि में चार हजार दिव्य प्रबन्ध, चार वेद, छः वेदांग, रामायण, षड्सात्विक पुराण और श्रीभाष्य स्तोत्ररत्न आदि का सुयोग्य श्रीवैष्णव विद्वानों से पारायण सम्पन्न कर, षड्रस युक्त बहुविध पक्वान्नों के द्वारा प्रपन्न श्रीवैष्णवों का आराधन कर उनको दक्षिणा देकर सन्तुष्ट करते हुये अपने आचार्य चरणों के उद्देश्य से उन विद्वान् ब्राह्मणों की पूजा की।

अपने आचार्य का उपरोक्त प्रकार से वैकुण्ठोत्सव सम्पन्न करके करुणासागर यतिराज ने दुःखित होकर भगवान से निवेदन किया कि- "हे नाथ! कूरेश नेत्रहीन हो गया है।" यह कहकर अपनी तरफ से आश्वासन देने के लिये एक श्रीवैष्णव को श्रीकूरेश के पास श्रीरंगम् भेजकर स्वयं श्रीवेदाचलनाथ भगवान की परिचर्या करते हुये वहीं पर निवास करने लगे।

।। श्रीप्रपन्नामृत का 49वाँ अध्याय पूर्ण हुआ ।।

क्रमशः

तिरुमल में दर्शनीय क्षेत्र

स्वामिपुष्करिणी : मंदिर के निकट स्थित यह तालाब अतिपवित्र है। यात्री मंदिर में प्रवेश करने के पूर्व इसमें स्नान करते हैं। आत्मा व शरीर की शुद्धि के लिए यहाँ स्नान करना श्रेष्ठ है।

आकाश गंगा : मंदिर की उत्तरी दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

पापविनाशनम् : मंदिर की उत्तरी दिशा में ५ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

वैकुंठ तीर्थ : मंदिर की ईशान दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

तुम्बुरु तीर्थ : मंदिर की उत्तरी दिशा में १६ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

भूगर्भ तोरण (शिलातोरण) : यह अपूर्व भूगर्भ शिलातोरण मंदिर की उत्तरी दिशा में १ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

ति.ति.दे. बगीचे : देवस्थान के आध्वर्य में सुंदर व आकर्षक बगीचे लगे हुए हैं, जिन में विशिष्ट पेड व पौधे मिलते हैं।

आस्थान मंडप (सदस हाल) : यहाँ धर्म प्रचार परिषद् के आध्वर्य में धार्मिक कार्यक्रम मनाया जाते हैं। जैसे भाषण, संगीत-गोष्ठी, हरिकथा-गान एवं भजन।

श्री वेंकटेश्वर ध्यान ज्ञान मंदिर (एस.वी. म्यूजियम्) : इस कलात्मक सुंदर भवन में एक म्यूजियम्, ध्यान केंद्र तथा छायाचित्र-प्रदर्शिनी आयोजित है।

ध्यान केंद्र : तिरुमल के एस.वी. म्यूजियम् एवं वैभवोत्सव मंडप में स्थित ध्यान केंद्रों में भगवान पर ध्यान केंद्रित कर भक्त शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

हिंदू धर्म की रक्षा व उसे आगे बढ़ाने में कई महान ऋषियों ने योगदान दिया। ऐसे ही एक ऋषि थे महर्षि वेदव्यास। उन्हें भगवान विष्णु का अवतार माना जाता है। अलौकिक शक्ति सम्पन्न महापुरुष वेदव्यास जी के पिता का नाम महर्षि पराशर और माता सत्यवती थीं। ऋषि वेदव्यास जी के जन्म के विषय में पौराणिक ग्रंथों में अनेक तथ्य प्राप्त होते हैं।

जन्म

प्राचीन काल में सुधन्वा नाम के एक राजा थे। वे एक दिन आखेट के लिये वन गये। उनके जाने के बाद ही उनकी पत्नी रजस्वला हो गई। उसने इस समाचार को अपने शिकारी पक्षी के

ऋषि-मुनि

महर्षि वेदव्यास

- डॉ.जी सुजाता

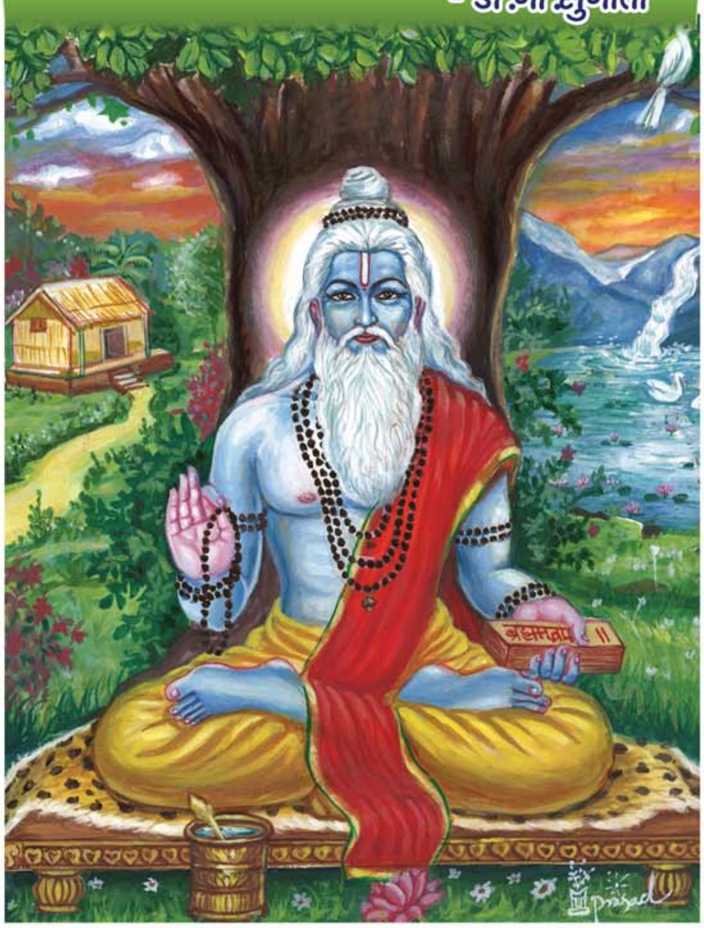

माध्यम से राजा के पास भिजवाया। समाचार पाकर महाराज सुधन्वा ने एक दोने में अपना वीर्य निकाल कर पक्षी को दे दिया। पक्षी उस दोने को राजा की पत्नी के पास पहुँचाने आकाश में उड़ चला। मार्ग में उस शिकारी पक्षी पर दूसरे शिकारी पक्षी ने हमला कर दिया। दोनों पक्षियों में युद्ध होने लगा। युद्ध के दौरान वह दोना पक्षी के पंजे से छूट कर यमुना में जा गिरा। यमुना में ब्रह्म के शाप से मछली बनी एक अप्सरा रहती थी। मछली रूपी अप्सरा दोने में बहते हुए वीर्य को निगल गई तथा उसके प्रभाव से वह गर्भवती हो गई।

एक निषाद ने गर्भ पूर्ण होने पर उस मछली को अपने जाल में फँसा लिया। निषाद ने जब मछली का पेट चीरा तो उसके पेट से एक बालक तथा एक बालिका निकली। वह निषाद उन शिशुओं को लेकर महाराज सुधन्वा के पास गया। महाराज सुधन्वा के पुत्र न होने के कारण उन्होंने बालक को अपने पास रख लिया, जिसका नाम 'मत्स्यराज' हुआ। बालिका निषाद के पास ही रह गई और उसका नाम 'मत्स्यगंधा' रखा गया, क्योंकि उसके अंगों से मछली की गंध निकलती थी। उस कन्या को 'सत्यवती' के नाम से भी जाना जाता था। बड़ी होने पर वह बालिका नाव खेने का कार्य करने लगी।

पौराणिक कथाओं के अनुसार, गुरु वशिष्ठ के पुत्र शक्ति और शक्ति के पुत्र पराशर हुए। पराशर स्वयं सिद्ध महर्षि थे, एक बार जब पाराशर मुनि सत्यवती के नाव पर बैठ कर यमुना पार करते हैं तो पाराशर मुनि उसके रूप सौंदर्य पर आसक्त हो जाते हैं और उसके समक्ष प्रणय संबंध का निवेदन करते हैं। परंतु सत्यवती उनसे कहती है कि हे ''मुनिवर! आप ब्रह्मज्ञानी हैं और मैं निषाद कन्या अतः यह संबंध उचित नहीं है। तब

पाराशर मुनि कहते हैं कि चिंता मत करो क्योंकि संबंध बनाने पर भी तुम्हें अपना कौमार्य नहीं खोना पड़ेगा और प्रसूति होने पर भी तुम कुमारी ही रहोगी। इस पर सत्यवती मुनि के निवेदन को स्वीकार कर लेती है। ऋषि पराशर अपने योग बल द्वारा चारों ओर घने कोहरे को फैला देते हैं और सत्यवती के साथ प्रणय करते हैं। ऋषि सत्यवती को आशीर्वाद देते हैं कि उसके शरीर से आने वाली मछली की गंध, सुगन्ध में परिवर्तित हो जायेगी। वहीं नदी के द्वीप पर ही सत्यवती ने वेदव्यास को जन्म दिया था। जन्म होते ही वह बालक बड़ा हो गया और अपनी माता से बोला- ''माता! तू जब कभी भी विपत्ति में मुझे स्मरण करेगी, मैं उपस्थित हो जाऊँगा।'' इतना कह कर वे तपस्या करने के लिये द्वैपायन द्वीप चले गये।

जन्म के समय वेदव्यास जी का वर्ण श्याम था, इसलिए इनका नाम कृष्ण हुआ। इनका जन्म यमुना नदी के द्वीप में हुआ था, इसलिए इन्हें कृष्णद्वैपायन के नाम से भी जाना गया। आगे चलकर कृष्णद्वैपायन ने वेदों का व्यास अर्थात् विभाजन, विस्तार व सम्पादन किया, इस कारण मूल नाम से ये वेदव्यास के नाम से प्रसिद्ध हुए। बदरीवन में निवास करने के कारण व्यास जी को बादरायण भी कह जाता है। इनकी पत्नी का नाम आरुणी था और पुत्र महान बालयोगी शुकदेव थे। कुछ कथाओं के अनुसार, कालपी में यमुना के किसी द्वीप में व्यास जी का जन्म हुआ था।

पौराणिक-महाकाव्य युग की महान विभूति महाभारत, अट्ठारह पुराण, श्रीमद्भागवत, ब्रह्मसूत्र, मीमांसा जैसे अद्‌वितीय साहित्य-दर्शन के प्रणेता वेदव्यास का जन्म आषाढ़ पूर्णिमा को लगभग 3000 ई. पूर्व में हुआ था।

कालान्तर में देवी सत्यवती का विवाह हस्तिनापुर के राजा शान्तनु से हुआ। जिससे चित्रांगद और विचित्र वीर नामक पुत्र पैदा हुए। चित्रांगद की एक गंधर्व द्वारा हत्या कर देने के बाद विचित्र वीर का विवाह अंबिका और अंबालिका नामक राजकुमारियों से हुआ। विचित्र वीर की कोई संतान नहीं थी। माता सत्यवती ने वंश चलाने हेतु व्यास ऋषि को उनके द्वारा पूर्व में दिए वचन के अनुसार अंबिका और अंबालिका से नियोग विधि से संतान उत्पत्ति के लिए हस्तिना पुर बुलाया। कहा जाता है कि वेदव्यास जब माता के कहे अनुसार अंबिका के पास गए तो उनके तेज को देख कर अंबिका ने आखें बंद कर ली थी, जिससे अंधा बालक धृतराष्ट्र पैदा हुए। वेदव्यास जब अम्बालिका के पास गए तो अम्बालिका उनके तेज से भयभीत होकर पीली पड़ गई जिस कारण पाण्डु रोग (पीलिया) ग्रसित पाण्डू का जन्म हुआ। जब वेदव्यास माता के कहने पर पुनः अम्बिका के पास नियोग के लिए गए तो डर के कारण अम्बिका ने अपनी दासी को भेज दिया था अतः दासी से विधुर नामक प्रकाण्ड ज्ञानवान पुत्र पैदा हुए। कहा जाता है कि कृष्णद्वैपायन पुनः माता सत्यवती को आवश्यकता पड़ने पर आह्वान करने को कह कर तपस्या करने के लिए हिमालय की ओर चले गए।

संजय को दिव्य दृष्टि

भगवान व्यास ने संजय को दिव्य दृष्टि प्रदान की, जिससे युद्‌ध-दर्शन के साथ उनमें भगवान के विश्वरूप एवं दिव्य चतुर्भुजरूप के दर्शन की भी योग्यता आ गयी। उन्होंने कुरुक्षेत्र की युद्‌धभूमि में भगवान श्रीकृष्ण के मुखारविन्द से निःसृत 'श्रीमद्‌भगवद्गीता' का श्रवण किया, जिसे अर्जुन के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं सुन पाया।

शास्त्रों की ऐसी मान्यता है कि भगवान ने स्वयं व्यास के रूप में अवतार लेकर वेदों का विस्तार किया। अतः व्यासजी की गणना भगवान के चौबीस अवतारों में की जाती है। इन्होंने वेदों के विस्तार के साथ महाभारत, अठारह महापुराणों तथा ब्रह्मसूत्र का भी प्रणयन किया।

महाभारत के, वे न केवल लेखक थे बल्कि महाभारत के साक्षी भी थे। उनके कारण ही महाभारत जैसा ग्रंथ की रचना हुई। महर्षि वेदव्यास महाभारत के सबसे प्रमुख,

प्रभावी, पूज्य व चमत्कारी पात्र हैं। संसार के किसी ग्रंथ में ऐसा दूसरा उदाहरण मिलना मुश्किल है जिसका लेखक स्वयं अपनी कृति का एक प्रमुख पात्र हो। महर्षि वेदव्यास ने स्वयं जगत पिता ब्रह्म की आज्ञा से महाभारत की रचना की थी।

महाभारत को लिखने के लिए गणेश जी से कहा गया। गणेश जी ने कहा ''मेरी एक शर्त है, मेरे लिखते समय मेरी लेखनी (कलम) रुकने न पाए, यदि यह रुक गई तो मैं लिखना बन्द कर दूँगा'' व्यास जी ने कहा, ठीक है। उन्होंने इस तरह के श्लोक बोले कि जितनी देर में गणेश जी श्लोक को समझ करके लिख पाते उतनी देर में व्यास जी अगला श्लोक सोच लेते। इस प्रकार व्यास जी किसी महाग्रंथ के संसार के पहले आशुवक्ता कहलाते हैं और गणेश जी पहले आशुलिपिक।

महाभारत के माध्यम से महर्षि वेदव्यास ने मनुष्य को सदाचार, धर्माचरण, त्याग, तपस्या, कर्त्तव्यपरायण तथा भगवान की भक्ति का संदेश दिया है। इस ग्रन्थ द्वारा वेदव्यास जी ने यह बताया है कि मनुष्य कठिनाइयों का सामना किस प्रकार कर सकता है और उन पर विजय कैसे प्राप्त कर सकता है। ये उन मुनियों में से एक हैं, जिन्होंने अपने साहित्य और लेखन के माध्यम से सम्पूर्ण मानवता को यथार्थ और ज्ञान का खजाना दिया है। महाभारत के द्वारा महर्षि वेदव्यास जी का उद्देश्य युद्ध का वर्णन करना नहीं, बल्कि इस भौतिक जीवन की निःसारता को दिखाना है।

वेदव्यास से पहले, वैदिक ज्ञान केवल बोले गए शब्दों के रूप में मौजूद था, क्योंकि वेदव्यास ने वेदों को विभाजित कर दिया था, इसलिए लोगों के लिए इसे समझना आसान हो गया। इस तरह सभी को दिव्य ज्ञान उपलब्ध कराया गया। महर्षि वेदव्यास ने अपने शिष्यों पेल, जैमिन, वैशम्पायन और सुमंतमुनि को चार वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्वणवेद और सामवेद) की व्याख्या की। भारतीय साहित्य का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ 'भगवद्गीता' इसी महाभारत का एक अंश है। इसके अतिरिक्त 'श्री विष्णुसहस्रनाम', 'अनुगीता', 'भीष्मस्तवराज', 'गजेन्द्रमोक्ष' जैसे आध्यात्मिक तथा भक्तिपूर्ण ग्रन्थ इसी के अंश हैं। इन्हीं पाँच ग्रन्थों को 'पंचरत्न' के नाम से पुकारते हैं। इन्हीं गुणों के कारण महाभारत 'पंचम वेद' के नाम से विख्यात है।

व्यास पूर्णिमा के शुभ दिन पर, ब्रह्म सूत्र, जिसे वेदांत सूत्र के रूप में भी जाना जाता है, व्यास ने बादरायण के साथ लिखा था। उन्हें चार अध्यायों में विभाजित किया गया है, प्रत्येक अध्याय को फिर से चार खंडों में विभाजित किया गया है। इस दिन को गुरु पूर्णिमा के रूप में भी जाना जाता है।

वेदव्यास क्षेत्र का इतिहास

यह अत्यन्त प्राचीन जनश्रुति है कि महर्षि वेदव्यास का सम्बन्ध कालपी से था। वर्तमान कालपी नगर के समीप ही यमुना तट पर स्थित वेदव्यास क्षेत्र अब भी इसकी स्मृति को जाग्रत किये हुए है।

जालौन जिले में यमुना नदी के तट पर बसी कालपी एक ऐतिहासिक प्राचीन नगर है जहाँ वेदव्यास जैसे महापुरुष ने जन्म लिया था। कालपी में यमुना नदी में जोंधर नाम की नदी जिस स्थान पर मिलती है, वह स्थान व्यास क्षेत्र कहलाता है। इसी व्यास क्षेत्र है बैठकर महर्षि वेदव्यास ने अपने अमर ग्रन्थों की रचना की थी। बसंत पंचमी को यमुना नदी व व्यास नदी के संगम स्थान पर प्रतिवर्ष मेले का आयोजन श्रद्धालुओं के महान आकर्षण का केन्द्र हैं। पुराणों के वर्णन से यह ज्ञात होता है कि कालपी का अस्तित्व अति प्राचीन है। महर्षि वेदव्यास की जन्मभूमि कालपी अपना एक गौरवपूर्ण इतिहास रखती है। आज भी बड़े स्थान के पास व्यास टीला बना हुआ है। काशी से 5 मील की दूरी पर स्थित व्यासपुरी में महर्षि वेदव्यास का मन्दिर है।

युवा

‘गीता-माधुरी’

(गीता में लभित जीवन का संगीत)

- श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण

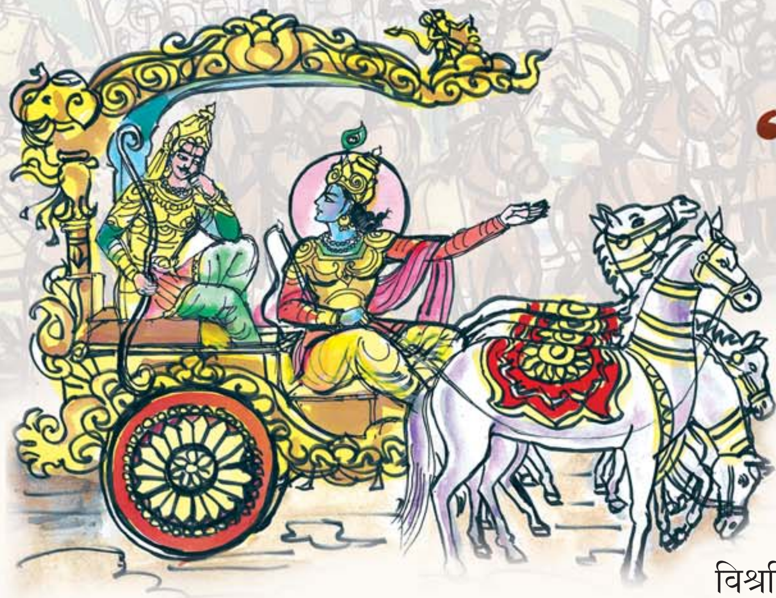

युवा-पीढी को एक संबोधन

ओ, जागते रहो रे युवा।
चलती देखो गीता की हआ
स्वच्छ साँस का धुआँ!
साँस ले लो; ताकत पाओ
बढ़ते चलो निरंतर!
बढ़ते चलो निरंतर!!

हाँ, जीवन जब सूना, सूना और जंगल लगने लगा। अपने भी जब पराये लगने लगे। निराशा और निस्पृहाओं ने मन के फुलवा को रेगिस्तान बनाने लगीं; तो यह संसार लगने लगा पराया।

और सारी दुनिया दुश्मन लगने लगा, तो संसार से निकल-बसने की इच्छा खड़ी भी हो जाती है। सारे जीवन के दरवाजे बंद हुए-से लगने लगे!

फिर क्या करें??!!

कुछ न करें!

साक्षात्, श्रीकृष्णपरमात्मा का दिया हुआ ‘‘भगवद्गीता’’ को हाथ में लें। भगवद्गीता की छाया में विश्रमित करें। भगवद्गीता नामक ‘‘कल्पवृक्ष’’ का आश्रय लें। गीता-रूपी जल-कुंड के अमृत-पान करें।

बस, इतने से तुम्हारे जीवन की व्यग्रता खत्म हो जायेगी। जीवन की अग्नि शांत हो जायेगी। जीवन की अनेक समस्याओं का समाधान तुम्हारे को अनायास मिल जायेंगे।

भगवद्गीता हम सबके लिए उस बहती नदी का किनारा है, जहाँ संसार के ‘‘नगीना-जवाहरी’’ (GEMOLOGYSTS) स्वच्छ रतन-मानिकों के लिए ढूँढते हैं। और, भगवद्गीता दुनिया के जवाहरों के लिए एक बृहत् ‘‘रतन-धन-खान’’ है। आओ, हे राहगीर! आज हम भगवद्गीता के चन्द रतन-मानिक ढूँढ लायें!

I. देह - शिक्षा

श्लो।। *देहिनोऽस्मिन यथा देहे कौमारं यौवनं जरा।*
तथा देहांतरप्राप्तिः धीरस्तत्र न मुह्यति।।

(गीता-०२-१३)

भावार्थ :

हमारे शरीर में मन, हृदय, आत्मा आदि विद्यमान रहते हैं। इनमें से जीवात्मा शरीर का भार-वहन करता

है। वह शरीर में होते हुए-देह-धर्म के अनुसार कौमार, यौवन, वार्धक्य आदि दशाओं से गुजरता है, यानी, शरीर की अवस्थाओं के रूपों का धारण करता है।

कुछ निर्धारित आयु के पश्चात्, देह का अवसान हो जाता है। शरीर का अंत हो जाता है।

इस तरह उस देह के अंत हो जाने के बाद, उसमें वसित ''जीवात्मा'' सृष्टि के आदेश के अनुसार फिर, नये दूसरे शरीर में प्रवेश कर, वहाँ शरीर-धर्म का आयुःपर्यन्त निर्वहण करता है। फिर वहाँ कौमार, यौवन, वार्धक्यादि विविध जीव-दशाओं व रूपों का अनुभव करता है। जो धीर मनुष्य होता है, वह इसे भली-भाँति जान कर, उन-उन जैविक दशाओं का निर्वहण कर निभाता है।

विवरण :

कोई एक जीवात्मा कहीं एक छोटी बच्ची बन कर जनम लेता है। अपना जीवन आरंभ करता है।

माँ के गोद से वह बच्ची आहिस्ता-आहिस्ता महीनों, सालों को बिता कर अपनी ''बाल्यदशा'' को गुजारती है। बाल्यदशा से कौमार, यौवन, प्रौढदशा वार्धक्य आदि जीवन-दशाओं को पार करते हुए अंतदशा मृत्यु का अनुभव कर, देह त्याग देती है।

इस तरह शरीर आयु के परिवर्तन के साथ, अपना रूप बदलता है। ऐसे शरीर का रूप-परिवर्तन प्रकृति का सहज धर्म है। हम लोग शरीर के इन बदलाओं पर सोचते और चिंतित होते नहीं हैं।

मगर हम, मृत्यु के - प्राप्त हो जाने पर दुःखित हो जा रहे हैं, क्योंकि हमें ''आत्म का धर्म'' मालूम नहीं है।

लेकिन फिर भी, जब देहि शरीर को छोड़ जाते-जाते, अपने साथ, प्रकृत जनम से संबंधित अनुभव अपने साथ ले जाता है और उन्हीं 'अनुभवों' के साथ पुनःजन्म लेता है। पुरा जन्म के इन्ही 'अनुभवों' को हम 'संस्कार' नाम से पुकारते हैं।

II. देह - शिक्षा

यंहि न व्यथयंत्येते पुरुषं पुरुषर्षभ।
समदुःखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते।।

(भगवद्गीता-०२-१५)

भावार्थ :

विषयेन्द्रिय संयोग के कारण शीतोष्ण और सुख-दुःख बन रहे हैं। ये अनित्य हैं, जिन्हें मानव को सहना ही होगा, क्यों कि वे तथ्य हैं और सहज हैं।

अतएव, हे पुरुष-श्रेष्ठ! धीर पुरुष, जो सृष्टि का मरम जानता हो, वह इन सुख-दुःखों को समान दृष्टि से अनुभवित कर जाता है। ऐसे पूर्ण पुरुष को ये ''विषयेन्द्रिय'' संयोग विचलित न कर पा सकेंगे। जो नर इन प्रापंचिक एवं विषयेन्द्रियों के ताड़न की परवाह न करेगा। ऐसा ही धीर पुरुष ''मोक्ष-सिद्धि'' के लिए योग्य बन जाता है। अतः, तुम धीर पुरुष बनने का सक्रम प्रयास करो।

विशेषार्थ :

इस उवाचा से पहले, भगवान ने सुख और दुःखों के बारे में बताते हुए वे अनुभूतियाँ अनित्य बताया था अर्थात् उन्हें कल्पित बताया था।

अब नर को प्रोत्साहन दे रहा है कि वह अपनी ज्ञान-विवक्षा के द्वारा इन सांसारिक द्वन्द्वों को ठुकरा कर उनसे अतीत, परे अपने को बढ़ने के लिए उकसा रहा है।

अपने में इन द्वन्द्वों की 'विवक्षा' बढ़ाने के लिए हमें दो प्रश्नों के समाधान ढूँढना चाहिए - १) क्यों हम आनंद की आकांक्षा करते हैं? (२) यह भौतिक प्रापंचिक आनंद हमें तृप्ति देती नहीं क्यों?

ये अति मुख्य प्रश्न हैं। पहले प्रश्न का समाधान अति सुलभ है।

भगवान एक अनंत, आनंद समुंदर है। हम उस अनंत समुंदर का केवल एक अंश मात्र हैं। आनंद-समुद्र के अंश होने के नाते हम उसकी तरफ सहज ही आकर्षित हो जाते हैं।

आनंद नीचे के तीन लक्षणों का हो -

१) वह परिमाण में अनंत हो। २) वह शाश्वत हो। ३) वह हमेशा नया एवं ताजा बन कर हो।

III. देह - शिक्षा

जातस्य ही ध्रवो मृत्युः ध्रुवं जन्म मृतस्य च।

तस्मादपरिहार्थिर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।।

(गीताशास्त्र-०२-२७)

भावार्थ :

''आत्म-ज्ञान'' से संबन्धित अत्युत्तम एवं चरम श्लोक है। भगद्गीता में यह द्वितीय अध्याय अत्युत्तम प्रकरण है, क्योंकि इसमें ''आत्मज्ञान'' का बोध है। संसार-भर के तत्वशास्त्रों में कहीं भी ऐसा वाला परिशुद्ध आत्मबोध न मिल पाता है, जो कि सर्वथा, सर्व कालीन सत्य है।

''आत्मावान् प्राणी, जो जन्म लेता है, उसे मृत्यु अवश्य मिल जाती है। और, जो मृत हो जाता है, उसे पुनःजन्म अनिवार्य है और ध्रुव है। जनन और मरण दो अनिवार्य तथ्य हैं और सत्य हैं। इन दोनों तथ्यों से छुटकारा पाने के संबंध में सोच-विचार करने अथवा शाश्वततत्व पर उपाय करने के लिए तुम तो अर्ह नहीं हो। अथवा तुम योग्य व पात्र नहीं हो।''

विशेषार्थ :

आत्मा साक्षात् परमात्मा का ही अंश है। आत्मा दृढ़ है और अविकारी तथा अविचल है।

गीताकार का कहना है कि आत्मा को शस्त्र और अस्त्र छेदेंगे नहीं। अग्नि उसे जलायेगा नहीं। पानी उसे भिगोयेगा नहीं और वायु उसे शोषित न कर पाये।

भगवान की तरह आत्मा नित्य है, सत्य है, अविचल है और सर्वव्यापी है। अतएव आत्मा सनातन है अर्थात् बहु कालीन ब्रह्म-पदार्थ है। शाश्वत है।

और भी आत्मा अव्यक्त है। तुम आत्मा के रूप-स्वभाव का वर्णन न कर पाओगे। आत्मा मानव के इन्द्रियों के लिए अगोचर है। आत्मा शाश्वत है। आत्मा अविकार-रूपी एक अद्भुत पदार्थ व अपदार्थ है। आत्मा के निखरे हुए तत्व को जानना ही 'सत्य-शोधन' है।

जो मनुष्य आत्मा को जानता है, मानो वह परमात्मा का अंश माना जा कर, लोक-पूजित बन जायेगा।

परिसमाप्ति :

गीता एक ग्रन्थ है, जिसमें शारीरिक, सांसारिक, प्राकृतिक-समस्त विशुद्ध तत्वों का व्याख्यान हो पाया है। गीता में सार्वत्रिक तत्वों का विशद विवरण का विस्तार से कथन हुआ है।

गीताशास्त्र बहुद्देशीय उपदेश है, जिसमें नीति, न्याय और धर्म का सर्वांगीण विवरण हम पा सकेंगे। गीता इस संसार का रेखा-चित्र है, जिसके दायरे में मानव के जीवन के चक्र का संविधान विद्यामान है।

सर्वेजनासुखिनोभवन्तु।

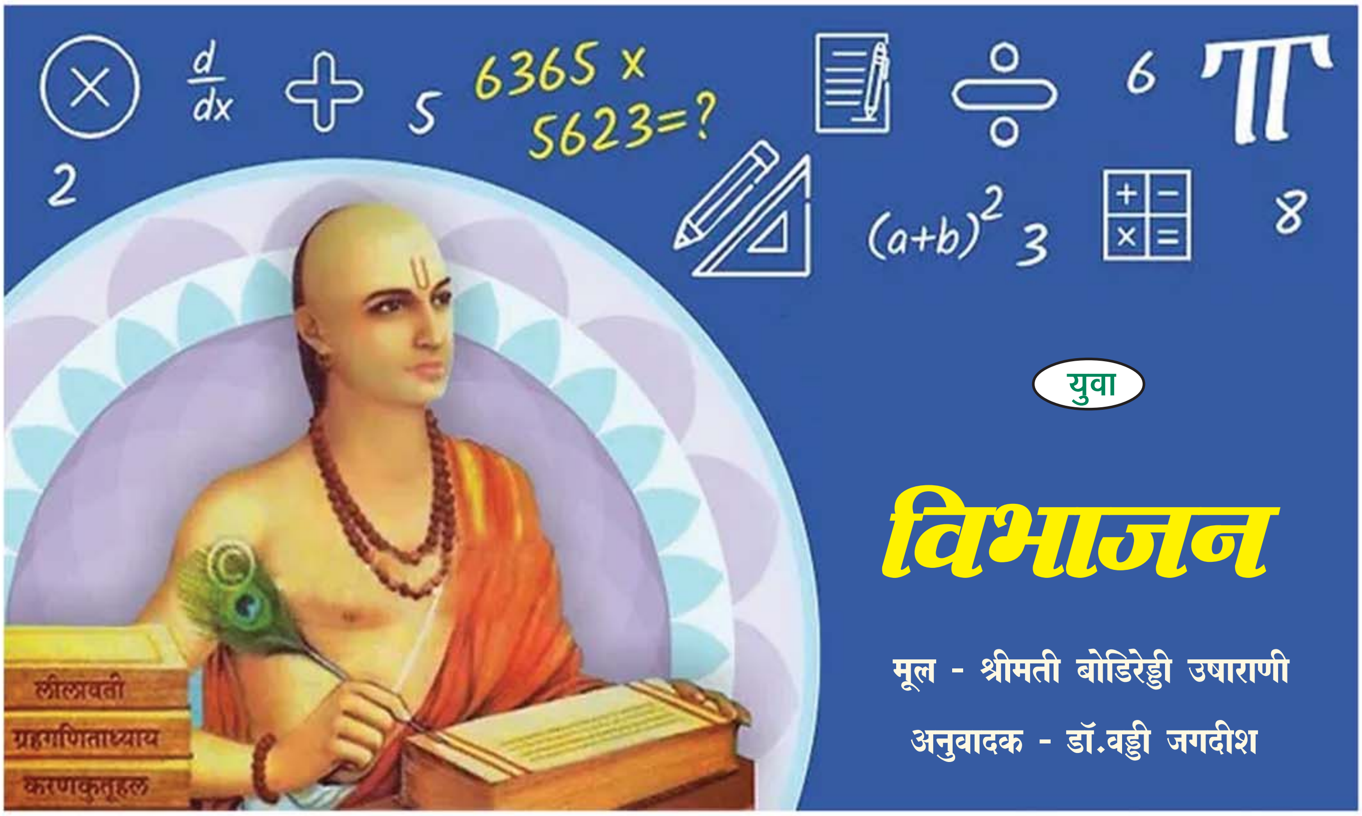

विभाजन

मूल - श्रीमती बोडिरेड्डी उषाराणी

अनुवादक - डॉ.वड्डी जगदीश

(5 अंकों वाली संख्या को 9 से विभाजन करते समय)

विधि (1) : 5 अंकों वाली संख्या को 9 से विभाजन करते समय विभाज्य प्राप्त करने के लिए पहली संख्या को 2वा अंक के नीचे, फिर दो अंकों का योग को तीसरी संख्या के नीचे लिखना है और तीनों अंकों का कुल को चौथा अंक के नीचे लिखने से विभाज्य मिलता है।

उदा (1) : 12,002 को 9 से विभाजन करने के लिए... 1 को 2 के नीचे लिखना है फिर.., 1+2 का योग 3 को सौकडों स्थान पर नीचे और 1, 2, 0 का कुल 3 को दशम स्थान पर नीचे लिखने से विभाज्य मिलता है।

विभाज्य : 1200
133
1333

शेष = अंकों का कुल = 1+2+0+0+2=5

उदा (2) : 13,102 को 9 से विभाजन करने के लिए... 1 को 3 के नीचे लिखना है, फिर 1+3=4 को दशम स्थान और सौकडों स्थान पर नीचे लिखकर और 1+3+1=5 को दशम स्थान के नीचे लिख कर उसे जोड़ना चाहिए...। तब विभाज्य मिलता है।

विभाज्य 1310
145
1455

शेष = 1+3+1+0+2=7 होता है।

विधि (2) : दोनों अंकों वाली संख्या को 8 से विभाजन करते समय :-

विभाज्य और शेष को पहचानना...।

इस तरह देते समय दी गयी संख्या को 8 से विभाजन करने के बाद दशम स्थान की संख्या विभाज्य होता है। फिर प्रथम स्थान संख्या को 2 से गुणना कर फिर प्रथम स्थान की संख्या से जोड़ने पर शेष मिलता है।

उदा (1) : 23 को 8 से विभाजन करने के लिए...

यहाँ दशम स्थान की संख्या 2 विभाज्य होता है।

शेष = 2x2+3=4+3=7 होता है।

उदा (2) : 24 को 8 से विभाजन करने के लिए :

दशम स्थान की संख्या 2 विभाज्य होता है।

शेष = 2x2+4=4+4=8 होता है।

लेकिन यहाँ शेष का विभाज्य फिर 1 होता है। तब शेष '0' बनता है। तब कुल विभाज्य 2+1=3 होता है।

उदा (3) : 36 को 8 से विभाजन करने के लिए :

दशम स्थान की संख्या 3 विभाज्य होता है।

यहाँ शेष = 3x2+6=12 बनता है।

लेकिन इस शेष का विभाज्य फिर 1 होता है साथ ही 4 शेष है। तब विभाज्य 4 बनता है।

उदा (4) : 92 को 8 से विभाजन करने के लिए...

दशम स्थान की संख्या '9' विभाज्य है।

शेष = 9x2+2=18+2=20 होता है।

लेकिन इस शेष का विभाज्य 2 और भागफल 4 होता है।

कुल विभक्त (विभाज्य) : 9+2=11

विधि (3) : तीन अंकों वाली संख्या को 8 से विभाजन करते समय :

3 अंकों वाली संख्या को 8 से विभाजन करते समय विभाज्य के लिए पहले दो अंकों वाली संख्या को प्रथम संख्या के साथ 2 से गुणना कर जोड़ना है।

विभाज्य का दहाई स्थान की संख्या को 2 से गुणना कर फिर प्रथम स्थान की संख्या से मिलाने पर शेष बनता है।

उदा (1) : 101 को 8 से विभाजन करने के लिए...

विभाज्य : 10+1x2=10+2=12

शेष : 2x2+1=5 बनता है।

उदा (2) : 104 को 8 से विभाजन करने के लिए...

विभाज्य : 10+2x1=10+2=12

शेष : 2x2+4=8 होता है।

यहाँ शेष का विभक्त 1 है। फिर शेष 0 बनता है, इसलिए कुल विभक्त =12+1=13

अंतिम शेष =0.

उदा (3) : 211 को 8 से विभाजन करने के लिए...

विभाज्य : 21+2x2 = 21+4=25

शेष : 5x2+1 = 10+1=11 बनता है।

इस शेष का विभक्त 1 है, शेष 3 है।

इसलिए कुल विभाज्य =25+1=26,

यहाँ कुल शेष =3.

उदा (4) : 311 को 8 से विभाजन करने के लिए...

विभाज्य : 31+2x3 = 31+6=37

शेष : 7x2+1 = 14+1=15 बनता है।

फिर शेष का विभक्त 1 है, शेष 7 होता है।

कुल विभाज्य 38 और शेष 7 होता है।

विधि (4) : 3 अंकों वाली संख्या में दहाई स्थान की संख्या 5 से बडी होने पर निम्न प्रकार से करते हैं...

उदा (1) : 266 को 8 से विभाजन करने के लिए...

विभाज्य : 26+2x2

= 26+4=30 बनता है।

शेष आने के लिए विभाज्य की संख्याओं में प्रथम स्थान को 10 मिलाकर फिर 2 से गुणना कर प्रथम स्थान की संख्या को जोड़ना चाहिए...।

शेष =(0+10) 2+6

= 20+6=26

इस का विभाज्य 3, शेष : 2 है, इसलिए कुल विभाज्य =33 बनता है।

इस तरह विभाजन विभिन्न प्रकार के पद्धतियों में कर सकते हैं।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

तिरुमल यात्री इनको आचरण न करें, तो अच्छा होगा।

- अपने साथ कीमती आभूषण या अधिक नकद न रखें।
- भगवान के दर्शन के लिए मात्र ही तिरुमल पधारें, अन्य किसी उद्देश्य से नहीं।
- दर्शन के लिए जल्दबाजी न करें, क्यू लाइन में ही सक्रम जाने का प्रयत्न करें।
- मंदिर के आचार-व्यवहारों के अनुरूप मंदिर में प्रवेश निषिद्ध है, तो कृपया मंदिर को न आवें।
- तिरुमल में सभी फूल भगवान की पूजा के लिए है इसलिए पुष्पों का धारण न करें।
- पानी और बिजली को वृथा न करें।
- अपरिचितों को काटेज में प्रवेश न दें। चाबियों को उन्हें न सौंपें।
- पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रिक थैलियों के अलावा किसी अन्य प्लास्टिक थैलियों का उपयोग न करें।
- चार माडावीथियों में चप्पल धारण न करें।
- भगवान दर्शन और आवास के लिए धोखेबाज या दलाल से संपर्क न करें।
- फेरीवालों से नकली प्रसाद मत खरीदें।
- तिरुमल मंदिर के परिसरों में थूकना आदि असह्य कार्य न करें।
- सेलफोन, कैमेरा जैसी चीजें और आयुधों को मंदिर के अंदर न ले जायें।
- विविध राजकीय कार्यकलाप, सभायें, ब्यानर, रास्तारोक, हडताल आदि सप्तगिरियों पर निषेधित है।

(आयुर्वेद)

जामुन और उसके स्वास्थ्य में लाभ

- डॉ.सुमा जोषि

जामुन फल के आयुर्वेद में उपयोगीकारक बताया गया है। इसका महत्व भारतदेश में बहुत है। जामुन फल, जिसे जम्बोलन, ब्लैक प्लम या जावा प्लम के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय पौराणिक कथाओं में पवित्र माना जाता है, और अक्सर इसे ''देवताओं का फल'' कहा जाता है। भारतीय पौराणिक कथाओं में जामुन फल के बारे में कुछ कहानियाँ इस प्रकार हैं :-

भगवान श्रीराम

ऐसा माना जाता है कि अयोध्या से अपने 14 साल के वनवास के दौरान, भगवान राम ने जामुन और बेर खाए थे, और वर्षों तक जामुन के पेड पर रहे थे। उनके सम्मान में बने मंदिरों में अक्सर कम से कम एक जामुन का पेड होता है।

भगवान मेघा

कहा जाता है कि बादलों के देवता जामुन के रूप में पृथ्वी पर अवतरित हुए थे, यही कारण है कि फल का रंग कभी-कभी गहरा और तूफानी होता है। जामुन का पेड भगवान श्रीकृष्ण के लिए भी पवित्र है और इसे अक्सर हिन्दु मंदिरों के पास लगाया जाता है।

जामुन का वैज्ञानिक नाम है Syzygium cumini L. और इसका कुल है - Myrtaceae. यह पेड पूरे भारतीय उपमहाद्वीप और बर्मा, बंग्लादेश, नैपाल, पाकिस्तान, इण्डोनेशिया और श्रीलंका सहित कई अन्य दक्षिण एशियाई देशों में पाया जाता है। यह एक विशाल, अत्यधिक पत्तेदार सदाबहार पेड है, जिसमें मोटी भूरी-भूरी छाल होती है जो लकडी के तराजू में छूटती है।

लकडी सफेद रंग की और टिकाऊ होती है। पत्तियाँ चमडे जैसी 6 to 12 cm. लम्बी और चौडी नोकवाली आयताकार-अण्डाकार से लेकार अण्डाकार आकार की होती हैं। फूल आकार में गोल या आयताकार, सुगंधित, हरे-सफेद होते हैं, और कुछ 10 to 40 के समूहों में आते हैं। फल आयताकार, 1.5 to 3.5 cm. लम्बे, गहरे बैंगनी या काले और स्वादिष्ट, एक बडे आकार के होते हैं, अन्दर एक बीज रहता है।

आयुर्वेदिक गुणधर्म

रस (मुँह का स्वाद) - कषाय (कसैला) रस, स्वादु और खट्टा। गुण-लघु (हलका), रूक्ष (सूखा)। विपाक - पचन के बाद थीकारस (कटु रस) बचता है। वीर्य-शीतवीर्य। दोषकर्म - वातदोष को बढ़ाता है। कफ एवं पित्तदोषों को सन्तुलित करता है।

स्वस्थ में जामुन का प्रयोग

1) आयुर्वेद मधुमेह से लडने के लिए जामुन को अत्यधिक प्रभावि फल के रूप में सुझाता है। फल के बीजों में जम्बोलिन और जम्बोसिन नामक सक्रिय तत्व होते हैं जो रक्त में जारी शर्करा की दर को धीमा कर देते हैं और शरीर में इंसुलिन के स्तर को बढ़ाते हैं। यह स्टार्च को ऊर्जा में परिवर्तित करता है और बार-बार पेशाब आना और जोर लगाने जैसे मधुमेह के लक्षणों को कम करता है।

2) जामुन उच्च मात्रा में पोटैशियम से भरपूर होता है। यह दिल से जुडी बीमारियों को दूर रखने में बेहद फायदेमंद है। जामुन का नियमित सेवन धमनियों को

सक्त होने से रोकता है जिससे एथेरोस्क्लेरोसिस होता है, उच्च रक्तचाप के विभिन्न लक्षणों को कम करता है जिससे उच्च रक्तचाप नियंत्रित होता है और स्ट्रोक और हृदयगति रूकने से बचाता है। 100 grms जामुन में 79 miligram पोटेशियम होता है जो इस रसदार फल को उच्च रक्तचापवाले आहार के लिए उपयुक्त बनाता है।

3) कम कैलोरी और उच्च फाइबर होने के कारण, जामुन सभी वजन घटानेवाले आहारों और व्यंजनों में एक आदर्श फल है। यह आपके पाचन में सुधार करता है और इसके औषधीयगुण शरीर के चयापचय को बढ़ावा देने के अलावा जल प्रतिधारण को कम करने में मदद करते हैं, आपकी भूख को संतुष्ट करते हैं और आपको तृप्ति का एहसास कराते हैं।

4) जामुन की सुखी और पीसी हुई पत्तियों में एंटी-बैक्टीरियल गुण होते हैं और इसका उपयोग दान्तों और मसूडों को मजबूत करने के लिए टूथ पाउडर के रूप में किया जाता है। फल और पत्तियों में मजबूत कसैले गुण होते हैं, जो इसे गले की समस्याओं के खिलाफ और सांसों की दुर्गन्ध को खत्म करने में अत्यधिक प्रभावी बनाते हैं। मुहं के छालों और मसूडों की सूजन को रोकने के लिए छाल के काढ़े को माउथवॉश के रूप में उपयोग किया जा सकता है या नियमित रूप से गरारे किया जा सकता है।

चमकदार त्वचा के लिए

नियमित रूप से जामुन का रस पीने से स्वस्थ, चमकदार त्वचा मिलती है। यह रक्त को डिटॉक्सीफाई और शुद्ध करता है और त्वचा को अंदर से चमकदार बनाता है। विटामिन-सी का उच्च सूचकांक दाग-धब्बे रहित चमकदार त्वचा का आशीर्वाद देता है।

1) सूखे, पिसे हुए जामुन के बीजों को शहद के साथ मिलाएँ और इस अपने चहरे पर मास्क की तरह लगाएँ और रात भर के लिए छोड दें। एक महीने तक नियमित रूप से इसका पालन करने पर यह मुहांसों, काले धब्बों और रंजकता को काफी हद तक कम कर देता है।

2) चेहरे को साफ करने के बाद ताजा जामुन का रस चेहरे पर लगाएँ। जामुन एक प्राकृतिक कसैला पदार्थ है जो टोनर के रूप में कार्य करता है, यह छिद्रों को कम करता है और तेल के अतिरिक्त स्राव को नियंत्रित करता है।

3) तैलीय त्वचा वाले लोग कुचले हुए जामुन, दही और गुलाब जल को मिलाकर फेस पैक की तरह लगाएँ। नियमित उपयोग से पिंपल्स में उल्लेखनीय कमी आएगी।

4) जामुन में मौजूद जैव रासायनिक योगिकों का उपयोग प्राचीन काल से रोगाणुओं से लडने और शरीर को विभिन्न संक्रमणों से बचाने के लिए किया जाता रहा है।

5) इस अविश्वसनीय फल के उत्कृष्ट वातहर और पाचन गुण इसे सभी पाचन समस्याओं के लिए एकमुक्त समाधान बनाते हैं। एंटी-फ्लैटुनेंट गुण आहार नाल में गैस के निर्माण को कम करता है, जिससे पेट फूलना, कब्ज, सूजन और पेट की गडबडी कम हो जाती है। जामुन को अर्क का एंटासिड गुण पेट में अत्यधिक एसिड के निर्माण को रोकता है जिससे अपच, अल्सर, गैस्ट्रिटिस का इलाज होता है, और शरीर में पोषक तत्वों के बेहतर अवशोषण को बढ़ावा मिलता है।

6) शक्तिशाली विषहरण गुणों के कारण, जामुन का अर्क रक्त को शुद्ध करने में बेहद फायदेमन्द है। यह रक्त को साफ करके रक्त परिसंचरण में सुधार करता है और रक्तप्रवाह से विषाक्त पदार्थों और तनाव हार्मोन को बाहर निकालने में भी मदद करता है। इसके अतिरिक्त,

आयरन की प्रचुर मात्रा इसे एनीमिया के लिए एक प्राकृतिक उपचार बनाती है और शरीर की कमजोरी और थकान से भी राहत दिलाती है।

7) यह फल सभी प्रकार की श्वसन समस्याओं के लिए एक प्रसिद्ध पारंपरिक उपचार माना जाता है।

8) जामुन पुरुषों में कामेच्छा बढ़ाने और प्रजनन क्षमता में सुधार के लिए एक ही बार में पारंपरिक उपचार प्रदान करता है। यह मजबूत कामोत्तेजक गुणों को प्रदर्शित करता है जो न केवल मानसिक तनाव और चिन्ता को कम करने में मदद करता है बल्कि टेस्टोस्टेरोन के उत्पादन को भी उत्तेजित करता है जो कामेच्छा बढ़ाता है। यह न केवल पुरुषों में पौरुष और सहनशक्ति बढ़ाता है बल्कि टेस्टोस्टेरोन और ल्यूटिनाइजिंग हार्मोन जैसे पुरुष हार्मोन के उत्पादन में भी सुधार करता है, जिससे पुरुषों में शुक्राणुओं की गतिशीलता और गुणवत्ता को बढ़ावा मिलता है।

जामुन के अधिक सेवन से दुष्प्रभाव

1) जामुन अम्लीय होता है और पाचन तन्त्र को परेशान कर सकता है जिससे एसिडिटी, दस्त पेट में ऐंठन या कब्ज हो सकता है।

2) यह खूजली, सूजन या सांस लेने में कठिनाई जैसी एलर्जी प्रतिक्रियाएँ हो सकती हैं।

3) ऑक्सलेट होने के कारण कुछ लोगों में गुर्दे की पथरी का कारण बन सकता है।

4) बहुत अधिक खाने से रक्तशर्करा का स्तर खतरनाक रूप से कम हो सकता है।

5) दर्द, ज्वर, छाती और गले में जलन, उल्टी, मुहांसे और फेफडों में सूजन भी हो सकती है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक-लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले कृपया लेखक-लेखिकाओं निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

1. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, देव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।
2. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।
3. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।
4. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित नहीं है।'
5. रचनाओं को प्रकाशन करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक का कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।
6. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक पास बुक का प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ संलग्न करके भेजना अनिवार्य है।
7. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं को निम्न पते पर भेज दें। पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति – 517 507.

आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!

लेखक - महामहोपाध्याय काशिकृष्णाचार्य
आयोजक - आचार्य के.रामसूर्यनारायण
अनुवाद - श्री अवधेष कुमार शर्मा

चतुस्त्रिंशः पाठः - तैंतालीसवाँ पाठ

अस्मद् शब्दः (मैं) (अहम्) युष्मद् शब्दः (तुम) (त्वम्)

'सर्व' शब्दः (समस्तम्) (सभी ने/सब ने)

ए.	ब	ए. - ब		
प्र.	अहम् - वयम्	त्वम् - यूयम्	प्र.	सर्वः - सर्वे
द्वि	माम् - अस्मान्	त्वाम् - युष्मान्	द्वि	सर्वम् - सर्वान्
तृ	मया - अस्माभिः	त्वया - युष्माभिः	तृ	सर्वेण - सर्वैः
च	मह्यम् - अस्मस्यम्	तुभ्यम् - युष्मभ्यम्	च	सर्वस्मै - सर्वेभ्यः
पं	मत् - अस्मत्	त्वत् - युष्मत्	पं	सर्वस्मात् - सर्वेभ्यः
ष	मम - अस्माकम्	तव - युष्माकम्	ष	सर्वस्य - सर्वेषाम्
स	मयि - अस्मासु	त्वयि - युष्मास्सु	स	सर्वस्मिन् - सर्वेषु

'एक' शब्दः द्विवचन, बहु वचनानि न सन्ति	'कति' शब्दः एकवचन द्विवचनानि न न्ति	'अनेक' शब्दः एकवचन द्विवचनानि न सन्ति	
एकः	कति	प्र.	अनेके
एकम्	कति	द्वि	अनेकान्
एकेन	कतिभिः	तृ	अनेकैः
एकस्मै	कतिभ्यः	च	अनेकेभ्यः
एकस्मात्	कतिभ्यः	पं	अनेकेभ्यः
एकस्य	कतीनाम्	ष	अनेकेषाम्
एकस्मिन्	कतिषु	स	अनेकेषु

'तत्' शब्दः (सः) (वह)

ए.	ब	ए. - ब
सः	ते	त्वम् - यूयम्
तम्	तान्	त्वाम् - युष्मान्
तेन	तैः	त्वया - युष्माभिः
तस्मै	तेभ्यः	तुभ्यम् - युष्मभ्यम्
तस्मात्	तेभ्यः	त्वत् - युष्मत्
तस्य	तेषाम्	तव - युष्माकम्
तस्मिन्	तेषु	त्वयि - युष्मास्तु

('एषः' इति शब्दः सः शब्दः यः, कः इति शब्दाः सर्वशब्दः वक्तव्याः प्रायशः सर्वनामशब्दाः सर्वे 'सर्व शब्द इव भवन्ति।)

जुलाई महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

मेष राशि - आपका मंगल स्वराशि में होने के कारण अकास्मात् धन लाभ के अवसर मिलेंगे। प्रयत्न-पुरुषार्थ से कामों में सफलता। भूमि, वाहनादि सौख्य, मान-सम्मानों में वृद्धि, उत्तम शरीर होने के कारण मन प्रसन्न रहेगा। पदोन्नति तथा गत रुके हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी।

वृषभ राशि - आपका शुक्र शत्रु राशि में होने के कारण पारिवारिक उलझनें, परेशानी, शारीरिक कष्ट, वृथा भागदौड़, मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा। अपने वाणी व्यवहार में नियन्त्रण रखें, स्वभाव में उग्रता एवं निकट बन्धुओं से मतभेद उभरेंगे। आरोग्य सुख, विरोधियों से उलझन, उत्तरार्ध में सकारात्मक परिवर्तन, शत्रु विजय।

मिथुन राशि - शनि-ढैय्या के कारण शारीरिक कष्ट, मानसिक तनाव व स्वास्थ्य हानि के योग हैं। लाभ कम व खर्च अधिक होगा। विभिन्न उलझनों का सामना रहेगा। अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखें नहिं तो अपने निकट बन्धुओं से मन-मुटाव एवं विरोध बढ़ेंगे। रोजी-रोजगार में अनुकूलता रहेगी।

कर्कटक राशि - धर्म-कर्म में रुचि बढ़ेगी। अन्न-वस्त्र, द्रव्यादि का लाभ, कर्म योग में तत्परता, उत्तम स्वास्थ्य। व्यवसाय-नौकरी पेशों में स्थान परिवर्तन सम्भव, पदोन्नति, मान-सम्मान बढ़ेगा। गृहस्थ जीवन सुखमय, घर में सुख-शान्ति, अपनों का सहयोग, मित्रों द्वारा विघ्न पड़ेगा।

सिंह राशि - आपके लिए यह मास मध्यम रहेगा। मास के शुरु में ही शुक्र का परिवर्तन कार्य क्षेत्र की विघ्न बाधाओं के निवारण में सहायक। नौकरी व्यवसाय की स्थिति सुखद, सामाजिक कार्यों में विकास, आर्थिक समुन्नति, मान-सम्मान में प्रतिष्ठा।

कन्या राशि - कार्यों में विघ्न, वृथा भागदौड़ एवं तनाव रहेगा। प्रभाव - प्रताप में वृद्धि, शैक्षणिक प्रगति, पारिवारिक सुख, पत्नी-पुत्र सुख। इष्ट मित्रों का सहयोग, रचनात्मक कार्यों में अभिरुचि, आर्थिक संतुलन, गृहस्थ जीवन सुखप्रद रहेगा। धार्मिक-सामाजिक कार्यों में व्यस्तता, उद्योग-धन्धों में सफलता, अनावश्यक वाद-विवाद हो सकता है।

तुला राशि - शुक्र दशमस्थ होने से अकारण क्रोध, उत्तेजना, व्यर्थ की भागदौड़ लगी रहेगी। नवीन योजनाओं का शुभारम्भ, आत्मीय जनों का सहयोग-समर्थन, नौकरी में उल्लास, संतान पक्ष की भाग्योन्नती, उद्योग-व्यापार में सफलता, शुभ संवाद।

वृश्चिक राशि - इस मास में अन्तर्द्वन्द्व, अनेक विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन-लाभ व कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। स्वास्थ्य बाधा, निरर्थक तनाव-विवाद, आर्थिक संतुलन के लिए प्रयास, राजकीय पक्ष से परेशानी, श्रमानुकूल सफलता। व्यवसाय में कुछ परिवर्तन का विचार बनेगा। यत्र तत्र यात्रा होंगी। प्रिय बन्धुओं से मिलन। पत्नी-पुत्र सुख।

धनुष राशि - स्वास्थ्य सामान्य रहेगा, पेट विकार एवं लिवर में दर्द का अनुभव होगा, अनावश्यक तनाव ग्रस्तता, श्रमाधिक्य। सामाजिक विकास, उत्साह में वृद्धि परन्तु क्रोध अधिक, पठन-पाठन में रुचि, आमदनी से अधिक खर्च तथा भागदौड़ बनी रहेगी।

मकर राशि - शनि की साढ़ेसाती होने के बाबजूद भी उन्नती होगी, व्यवसायिक क्षेत्रों में प्रतिकूल वातावरण रहेगा। आरोग्य सुख, अव्यवस्थित दिनचर्या होने के कारण स्वास्थ्य चिन्ता बनी रहेगी। परन्तु मान-सम्मान प्रतिष्ठा में वृद्धि एवं विदेशी कार्यों में प्रगति होगी।

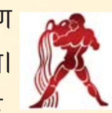

कुंभ राशि - व्यवसायिक क्षेत्रों में प्रतिकूल वातावरण का सामना रहेगा। परन्तु मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। दुर्बलता का निवारण, मनोबल-धर्मबल की वृद्धि, स्रमाधिक प्रयासों में श्रमपूर्ण सफलता। परिवार में तनाव व वैचारिक मतभेद होंगे। भूमी सम्बन्धी क्रय-विक्रय हो सकता है।

मीन राशि - शनि की साढ़ेसाती होने से व्यवसाय में अनिश्चित बनी रहेगी। आय कम और व्यय अधिक रहेगी। आर्थिक विकास होगा, रोग-शोक-ऋण-शत्रु बाधा का निवारण। अपनों के सहयोग-मित्रों का सहयोग से कार्य में प्रगति। नौकरी-व्यापार में उन्नति, सामाजिक कार्यों में व्यस्तता, यत्र तत्र यात्रा होने के कारण मन खिन्न रहेगा।

नीतिकथा

इलाज का रहस्य

- श्री के रामनाथन

एक बार राजा नागार्जुन अपने मंत्री तथा कुछ सैनिकों के साथ आखेट करने जंगल में आये थे। उस समय तेज हवा बह उठी और साथ ही जोर की वर्षा होने लगी। तब मंत्री ने राजा और अन्य लोगों को निकट एक पुराने महल में ले चले। कठोर वर्षा के कारण उनको वहीं ठहरना पड़ा। राजा उस पुराने मंडप में सो रहे थे और दो सैनिक उनके निकट रहकर पहरा कर रहे थे। सब लोग गहरी नींद में थे। आधी रात में राजा चिल्लाते हुए उठ बैठ गये। यह देखकर मंत्री उसके निकट आकर ऐसा चिल्लाने का कारण पूछा। तब राजा ने कहा कि मेरे एक कान के अन्दर कोई कीड़ा घुस गया, इससे मुझे बेहद दर्द हो रहा है।

यह सुनकर मंत्री साथ आये वैद्य द्वारा उसे दवाइयाँ दिलवायी। पर वे सब बेकार निकले और राजा का दर्द भी दूर नहीं हुआ। इतने में वर्षा थम गयी और वे सब अपने महल लौट गये। महल वापस आने के बाद मंत्री ने अपने देश के महान वैद्यों को बुलाकर राजा के दुख को दूर करने का प्रबंध किया, पर वे सब विफल हो गये। राजा दर्द के मारे अत्यंत उदास एवं कमजोर हो गये। यहाँ तक कि वे खाना भी बराबर नहीं लेने लगे। इससे राजपरिवार में सब चिंता में पड़ गये।

राजा का स्वास्थ्य दिन ब दिन बिगड़ता जा रहा था। यह देखकर मंत्री ढिंढ़ोरा पिटवाया कि जो राजा को रोग से बचाते हैं उनको हजार स्वर्ण मुद्रायें दी जायेंगी। खबर सुनकर बहुत से वैद्य आये और अनेक तरिकों से राजा को रोग से मुक्त कराने का प्रयास करने लगे। परंतु वे सब बेकार निकले। इससे राजा का दुख भी बढ गया और उनका शरीर भी बहुत कमजोर होने लगा।

इतने में आनंदतीर्थ नामक एक साधु अपने शिष्यों के साथ वहाँ आये थे। उनको मालूम हुआ कि राजा कान के दर्द से दुखित और कमजोर है और उनका रोग दिन ब दिन बढता जा रहा है। वे तुरंत राजा से मिलने महल में आये। उन्होंने पहचान लिया कि राजा के अस्वस्थ रहने का कारण क्या है। उन्होंने राजा के निकट खड़े मंत्री को देखकर जोर की आवाज में पूछा कि इतने दिन तक राजा को उचित वैद्य क्यों नहीं दिया गया? अब राजा तो अपनी अंतिम घड़ी में हैं। ठीक है, अब राजा के प्राण को बचाना है तो सिर्फ एक ही उपाय है।

यह सुनकर मंत्री ने कहा, महाशय, जो भी उपाय आप बतावें वह जितना भी कठिन क्यों न हो उसे हम करने को तैयार है। आप किसी न किसी तरह राजा के प्राण बचाइये। साधु और मंत्री की बातों को राजा भी ध्यान से सुन रहे थे। अब उनके मन में थोडा विश्वास पैदा हो गया कि हम बच सकते हैं।

साधु ने मंत्री को निकट बुलाकर कहा कि इस देश की सीमा में एक बडा पर्वत है और उसका नाम पावनगिरि है। वहाँ उस पहाड़ी की चोटी पर नील रंग के पुष्पों के पौधे होते हैं। उस पौधे के पुष्प और पत्तों को लाने पर राजा को बचा सकते हैं। यह सुनकर मंत्री ने तुरंत सैनिकों को भेजकर उन सबको लिवा लाया। मंत्री ने उन सब को साधु के हाथ में सौंप दिया। साधु ने उन पत्तों तथा पुष्पों को भगवान की मूर्ति के सामने रखकर उपासना की। उसके बाद उन्होंने उन पत्तों तथा पुष्पों को निचोड़कर रस निकाला।

वे उस रस को राजा के कान में डाला और थोडे समय के बाद उनके कान के निकट से एक कीड़े को हाथ में निकालकर राजा को दिखाकर बताया कि राजन्, इस कीड़े के कारण ही आपको असहनीय दर्द हो रहा था। अब वह कीड़ा मरकर बाहर आ गया और आप जल्दी ही दर्द से मुक्त हो जायेंगे।

साधु की बात और कार्य से अब राजा के मन में विश्वास पैदा हो गया कि उनका दुःख दूर हो जायेगा और वे जल्दी ही स्वस्थ हो जायेंगे। साधु के कहे अनुसार कुछ ही दिनों में राजा का दर्द दूर हो गया और वे धीरे-धीरे स्वस्थ होने लगे। आखिर राजा इतने स्वस्थ हो गये कि उनमें अपना राजकाज चलाने की हिम्मत तक आ गयी थी। राजा के उत्तम और उन्नत स्वास्थ्य को देखकर उनके परिवार के जन, प्रजा, मंत्री सब आनंद का अनुभव करने लगे।

थोड़े दिन के बाद साधु वहाँ से निकलने के विचार से राजा से विदा लेने लगे। राजा ने बेमन उनको विदा दी। तब मंत्री ने उनको हजार स्वर्ण मुद्रायें पुरस्कार में देने के लिए ले आया। परंतु साधु ने उसे

इनकार करते हुए कहा कि आप इन स्वर्ण मुद्राओं से गरीबों की उचित सहायता कीजिये।

साधु उसके बाद अपने शिष्य के साथ वहाँ से निकल पड़े। चलते समय रास्ते में एक शिष्य ने अपने गुरु से पूछा कि, गुरुवर, इतने महत्वपूर्ण औषधि के बारे में आपने इसके पूर्व मुझे क्यों नहीं बताया? उसका जवाब देते हुए साधु ने कहा कि वत्स, वह नील पुष्प के पौधे हर पहाड़ी प्रदेश में मिलते हैं। असल में राजा का रोग उसके कान में नहीं था बल्कि उसके मन में था। जब राजा को पहली बार दर्द हुआ तब उसने निश्चित कर लिया था कि मुझे इस दर्द के मारे प्राण तक देना होगा। इससे उसका आत्मविश्वास छूट गया। इसलिए किसी भी दवा से उनके मन का रोग दूर नहीं हुआ।

यह ताड़कर मैं ने ऐसा उपाय अपना लिया। मैं ने उनके कान के पास जो कीड़ा निकाला था वह भी झूठा ही है। नील पुष्प और उसके पत्ते से जो रस निकालकर उसके कान में डाला गया वह भी बहाना मात्र है। मेरे ऐसे कार्य से राजा के मन में आत्मविश्वास पैदा हो गया कि वे स्वस्थ हो गये हैं और उनको दर्द से मुक्ति मिल गयी है। उनके मन में उठे ऐसे विचार से उनका आत्मविश्वास बल्वत हो गया और वे थोड़े ही दिनों में स्वस्थ हो गये। मेरे इलाज का रहस्य यही है।

मतलब यह है कि आत्मबल से बढकर कोई बडा औषध या बल दुनिया में कहीं नहीं है।

चित्रकथा

दैव निंदा महा पाप है

तेलुगु मूल - श्रीमती वाविलाल नागवल्लि
अनुवादक - डॉ.एम.रजनी
चित्रकार - श्री के.द्वारकनाथ

श्रीकृष्ण का बुआ श्रुतदेवी। उनके पती का नाम दमघोष। इन दोनों का पुत्र शिशुपाल था। श्रीकृष्ण से शिशुपाल का वैर था। इसलिए श्रीकृष्ण ने अपने सुदर्शन चक्र से उसका संहार किया। वह कहानी निम्न लिखित है। 1

नीति : किसी भी हालत में ईश्वर की निंदा न करें। यदि आप ऐसा करते है तो हर किसी की दुर्गति अवश्य होगी। **स्वस्ति।**

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम..
लिंग/आयु..........., चंदा नंबर.......................
पता..
....
मोबाइल नं...

क्विज-24

1) व्यास का और एक नाम क्या है?
ज)..
2) वेदव्यास किस भगवान के प्रतिरूप है?
ज)..
3) तिरुप्पुट्कुळि मंदिर के माताजी का नाम क्या है?
ज)..
4) तिरुप्पुट्कुळि मंदिर के तीर्थ पुष्करिणी का नाम क्या है?
ज)..
5) तिरुनिन्ड्रवूर क्षेत्र के मूलमूर्ति का नाम क्या है?
ज)..
6) तिरुएव्वुल मंदिर के विमान गोपुर का नाम क्या है?
ज)..
7) शांभवी मुद्रा का योग में कहने वाला नाम क्या है?
ज)..
8) तिरुमल में ध्वजावरोहण के बाद करनेवाले महोत्सव क्या है?
ज)..
9) वृषपर्व की पुत्री का नाम क्या है?
ज)..
10) शुक्राचार्य की पुत्री का नाम क्या है?
ज)..
11) राजा ययाति का दूसरी पत्नी का नाम क्या है?
ज)..
12) श्रीकृष्ण के बुआ का नाम क्या है?
ज)..
13) श्रुतदेवी का पुत्र का नाम क्या है?
ज)..
14) श्रुतदेवी का पति का नाम क्या है?
ज)..
15) सुदर्शन चक्र किस को संहार किया है?
ज)..

बिंदी को जोड़िए

रंगों को भरिये क्या!

निम्न लिखित को मिलाएँ!

1) ध्वजस्तंभ	अ) शिष्य
2) सरोवर	आ) मंदिर
3) आरति	इ) फल
4) गुरु	ई) कछुआ
5) पेड़	उ) घंटा

1) आ 2) ई 3) उ 4) अ 5) इ

श्री गुरु प्रार्थना श्लोक

नित्यानंदैक कंदाय।
निर्मलाय चिदात्मने।।
ज्ञानोत्तमाय गुरवे।
साक्षिणे ब्रह्मणे नामः।।

चित्रों को जोडिएँ

(a)

(b)

(c)

(d)

(e)

जवाब : a) 5, b)4, c)1, d)2, e)3.

(1)

(2)

(3)

(4)

(5)

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : ....
(अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ....
....
पिनकोड ....
मोबाइल नं ....

2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
(अ) चंदा की संख्या :
(आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
धनादेश (BC's) / मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) /
भारतीय डाकघर (IPO) / ई.एम.ओ. (EMO) / :
दिनांक :

स्थान :
दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने के लिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करें।

STD Code: 0877
दूरभाष :
2264359, 2264543.
संपादक : 2264360

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

मंत्र
ॐ नमो वेंकटेशाय

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

दि. 13-06-2024 को तिरुचानूर, श्री पद्मावतीदेवीजी को धर्मपत्नी सहित आं.प्र. के मुख्यमंत्री माननीय श्री एन.चंद्रबाबू नायडूजी और परिवार के साथ आं.प्र. के मंत्री (ह्यूमन रिसोर्स डेवलपूमेंट, आई.टी. इलेक्ट्रॉनिक्स अण्ड कम्युनिकेशन, आर.टी.जी.) श्री एन.लोकेशजी ने दर्शनार्थ पधार लिया। वेद पंडित वेदाशीर्वचन किया। तदनंतर तीर्थ-प्रसाद को मुख्यमंत्रीजी को समर्पित करते हुए ति.ति.दे. के जे.ई.ओ. श्री वी.वीरब्रह्मम्, आई.ए.एस.। इस कार्यक्रम में अन्य उच्च अधिकारियों एवं विधान सभा के सदस्यों ने भाग लिया।

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams
Printing on 25-06-2024 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for
India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2024-2026
"LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2024-2026"
Posting on 5th of every month.

व्यास(गुरु)पूर्णिमा

दि:21-07-2024